फ़ेहरिस्त

❑❑❑

शर्फ़े इन्तिसाब

मेरे शौहरे मोहतरम के नाम

जिनकी दिली ख़्वाहिश पर मुझे यह किताब तालीफ़ करने का शर्फ़ हासिल हुआ। और जिन्होंने इस किताब के तालीफ़ करने में मेरी ख़ूब मदद की।

अल्लाह तआला की बारगाह में मैं यह दुआ करती हूं कि दुनिया व आख़िरत में मुझे कुर्ब अता फ़रमाये।

आमीन.................

तुम सलामत रहो हज़ार बरस
हर बरस के हों दिन पचास हज़ार

रेशमा खानम अमजदी
1 रबीउल अव्वल 1434 हिजरी

सबबे तालीफ़

एक मरतबा मेरे शौहरे मोहतरम कहने लगे कि मुआशरे में बहुत सारी बुराइयों और नाजायज़ व हराम रसूमात बढ़ती जा रही हैं। मेरी यह ख़्वाहिश है कि आप एक ऐसी किताब तालीफ़ करें जिसमें मुख़्तसरन पैदा होने से लेकर मरने तक की नाजायज़ व हराम रसूमात और उनकी इसलाह और उनका शरअई हुक्म कलमबंद हो।

बल्कि उन्होंने इस किताब का नाम ''रूसूमात'' मुन्तख़ब किया मैंने आपके हुक्म पर क़लम उठाया और लिखना शुरू किया। मेरे इस काम में मेरे शौहरे मोहतरम की मदद पेश-पेश रही।

अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करती हूं कि अल्लाह तआला हमारे और उनके हौसलों में बलन्दी अता फ़रमाये।

नीज मैं शुक्र गुज़ार हूं अपने उस्ताजुल मोहतरम शहजादा-ए-सदरूश्शरीआ मुहददिसे कबीर अल्लामा जियाउल मुस्तफ़ा क़ादरी साहब और उस्ताद साहिबा शहज़ादिये सदरूश्शरीआ आलिमा आयशा ख़ातून साहिब दामत बरकातहुम आलिया और कुल्लियतुल बनातिल अमजदिया घौसी की जुमला मुअल्लिमात की। जिनकी खुसूसी तवज्जो और मेहनत से आज मैं इस मक़ाम पर हूं। और वालिदैन करीमैन और ख़ालू डाक्टर फ़ख़रूद्दीन क़ादरी (मरहूम) और खाला जान साहिबा की तहे दिल से शुक्र गुज़ार हूं जिनकी हौसला अफ़ज़ाई और तवज्जो से आज मैं मन्जिले मक़सूद पर पहुंची।

अल्लाह तबारको तआला की बारगाह में दुआ है कि वो अपने हबीब सरकारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सदक़े में इन सभी के दराजात व मरातिब में बलन्दियां अता फ़रमायें और मुझे ज़्यादा से ज़्यादा खिदमते दीन करने का जज़्बा अता फ़रमाये।

आमिन बजाहे सयदुलमुरसालीन

रेशमा ख़ानम अमजदी

2 रबीउल अव्वल 1434 हिजरी

باسمہ تعالیٰ

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی حَبِیۡبِہِ الۡکَرِیۡمِ ط

हक़ीक़त ख़ुराफ़ात में खो गई
यह उम्मत रिवायात में खो गई

(डा. इक़बाल)

बच्चे की पैदाइश, ख़तना, अक़ीक़ा, बिस्मिल्लाह ख़्वानी, शादी बियाह और दूसरी तमाम तकरीबात से लेकर इन्सान के आख़री अन्जाम तक मानी मौत तक मुस्लिम घरानों में तरह-तरह की रस्में बरती जाती हैं। हर मुल्क में नई रूसूम हैं। और हर क़ौमे ख़ानदान के रिवाज और तरीक़े जुदागाना रूसूम की बुनियाद उर्फ़ पर है। यह कोई नहीं समझता कि शरअन यह वाजिब या सुन्नत या मुस्तहब है।

लिहाज़ा जब तक किसी रस्म की मुमानअत शरीअत से साबित न हो उस वक़्त तक उसे हराम व नाजायज़ नहीं कह सकते। खींचतान कर उसे नाजायज़ व ममनूअ क़रार देना बड़ी ज़्यादती है। और बिला वजह मुसलमानों को बिदअती और हराम का मुरतकिब कहना और भी ज़्यादती है। और दीन में हद से बढ़ जाना है। कुछ उलमा का कहना है चूंकि फ़लां रस्म को लोग फ़र्ज़ समझने लगे हैं और अब कभी तर्क नहीं करते हैं इसलिए लोगों को हम इस रस्म से रोकते हैं। लोग एक ग़ैर फ़र्ज़ को फ़र्ज़ समझने लगे हैं।

मुसलमानों! ख़ूब अच्छी तरह समझ लीजिये यह बहुत बड़ा धोका है। और हक़ीक़त में यह लोग ख़ुद भी धोके में हैं और दूसरों को भी धोका दे रहे हैं। याद रखिए कि किसी चीज़ को हमेशा करते रहने से यह लाज़िम नहीं आता कि उसको करने वाला फ़र्ज़ समझ रहा है किसी चीज़ को हमेशा करते रहना और बात है और फ़र्ज़ समझ लेना और बात है। यह कौन नहीं जानता कि किसी चीज़ को फ़र्ज़ समझना या फ़र्ज़ न समझना इसका तअल्लुक़ अक़ीदा से है ना कि अमल?

कहां अमल और कहां अक़ीदा? अमल और चीज़ है अक़ीदा और चीज़ दोनों में बड़ा फ़र्क़ हैं।

बहरहाल खुलासा यह है कि मुसलमानों में रिवाज पाने वाली रसूमात नाजायज़ व हराम नहीं। बल्कि कुछ रस्में नाजायज़ और कुछ जायज़। और जायज़ रस्मों के करने में कोई हर्ज नहीं। हां यह ज़रूर है कि जायज़ रस्मों की पाबन्दी उसी हद तक कर सकता है कि किसी हराम फेल में मुब्तिला न हो। जिनमें मुस्लिम घरानों में होने वाली मुख़्तलिफ़ रसूमात का मैं मुख़तसरन ज़िक्र करना चाहती हूं।

बच्चे की विलादत के बाद की रसूमात

अकसर जाहिलों में यह रिवाज है कि बच्चों की पैदाइश या अक़ीक़ा या ख़तना या शादी बियाह के मौक़ों पर मुहल्ला या रिश्तादार की औरतें जमा होती हैं और गाती बजाती हैं यह नाजायज़ व हराम है। कि अव्वलन ढोल बजाना ही हराम है फिर औरतों का गाना और ज़्यादा बुरा। औरत की आवाज़ ग़ैर महरम तक पहुंचाना और वो भी गाने बजाने की यह सब कितने फ़ितनों का सरचश्मा है।

बच्चे की पैदाइश के मौक़ा पर मुखतलिफ़ मुल्कों में मुख़तलिफ़ रस्में हैं। मगर चन्द रस्में ऐसी हैं जो तक़रीबन कुछ ही फ़र्क़ से हर जगह पाई जाती हैं।

1. लड़का पैदा होने पर आमतौर पर ज़्यादा ख़ुशी होती है और अगर लड़की पैदा हो तो रन्ज व ग़म महसूस करते हैं और औरतों पर ज़ुल्म व ज़ियादती करते हैं।
2. पहले बच्चे पर ज़्यादा ख़ुशी मनाई जाती है। फिर और बच्चों पर ख़ुशी तो मनाई जाती है मगर कम मनाई जाती है।
3. अगर लड़का पैदा हो तो पैदाइश के छः रोज़ तक औरतें मिलकर ढोल बजाती हैं।
4. पैदाइश के दिन लडडू या कोई मिठाई अहले क़ुराबत में तकसीम की जाती है।
5. इस दिन मीरासी डोम, दूसरे गाने बजाने वाले घर घेर लेते हैं। और बेहूदा और फुज़ूल क़िस्म के गाने गाकर इनाम तलब करते

हैं। और फिर मुंह मांगी चीज़ ले जाते हैं।

6. बहन-बहनोई वग़ैरा को जोड़े-रूपये वग़ैरा बहुत सी रस्मों की वजह से दिये जाते हैं। लुट धुलाई गोंद बनवाई वग़ैरा।
7. दुल्हन का मां-बाप, भाई की तरफ़ से छोछक आना ज़रूरी होना है जिस्में यह होता है कि दूल्हा-दुल्हन, सास, ससुर, नंद, नंदोई, यहां तक कि घर के भिश्ती (पानी भरने वाले) काम करने वाले वग़ैरा के लिए भी कपड़ों के जोड़े, नक़दी रूपये, और अगर लड़की पैदा हो तो लड़की के लिए छोटा-छोटा ज़ेवर होना भी ज़रूरी होता है। अर्ज़ यह कि मैके वालों का दीवाला निकल जाता है।
8. मालिन और भटयारी (रोटी पकाने वाली) घर के दरवाज़े पर पत्तों का सेहरा या काग़ज़ के फूल बांधती है। जिसके बदले में जोड़ा और रूपये वग़ैरा वुसूल करते हैं।

मुन्दरजा वाला रसूमात की ख़राबियां

लड़की पैदा होने पर रन्ज करना कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन का तरीक़ा है और इसके मुतअल्लिक़ क़ुराने पाक में अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है -

तर्जुमा :- और जब उनमें किसी को बेटी होने की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो दिन भर उसका मुंह काला रहता है और वो ग़ुस्सा खाता है। (पारा - 14)

मज़कूरा आयत से यह मालूम हुआ कि लड़कियों के पैदा होने पर रन्ज व ग़म का इज़हार करना काफ़िरों का तरीक़ा है। लेकिन आज यह देखा जा रहा है कि अगर किसी घर में लड़की पैदा हो गई तो उस घर में सफ़े मातम बिछ जाती है। और घर- का घर रन्ज व अलम में डूब जाता है। और ख़ुशी के बजाये ग़म का बादल छा जाता है। लड़कियों को अपने ऊपर बोझ और वबाले जान समझने लगते हैं।

नोट :- हाल ही में एक वाक़िया पेश आया कि किसी एक के घर लड़की की विलादत हुई तो वालिद का कहना यह था कि यह ख़बर सुनकर मेरा दम सूख गया।

अफ़सोस की बात है कि लड़कियों की विलादत पर ऐसे नज़रियात रखे जा रहे हैं। बल्कि हक़ तो यह है कि जिसके यहां पहले लड़की पैदा हो वो रब्बे तआला के फज़्लो करम से ख़ुशनसीब है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खाना में अव्वल लड़की ही पैदा हुई तो गोया रब्बे तआला ने सुन्नते नबवी अता फ़रमा दी।

लड़कियों का पैदा होना बाइसे रहमत है।

हदीस 1 :- हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि. से मरवी है कि उन्होंने कहा कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के लड़की पैदा हुई और उसने न उसको ज़िन्दा दफ़न किया। उसे बे वुकअत समझा न अपने बेटे को उस पर तरजीह दी तो अल्लाह जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा।

हदीस 2 :- नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस घर लड़कियां होती है उस पर आसमान से रोज़ाना बारह रहमतें नाज़िल होती हैं। और उस घर की फ़रिश्ते ज़ियारत करते रहते हैं। नीज़ उनके वालिदैन के हक़ में हर एक शबो-रोज़ के बदले साल भर की इबादत लिखी जाती है। नुजहतुल मजालिस जि.2 स.83

हदीस 3 :- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स तीन लड़की की इस तरह परवरिश करे कि उनको अदब सिखाये और उन पर मेहरबानी का बर्ताव करे तो अल्लाह तआला ज़रूर उसके जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा। यह इरशादे नबवी सुनकर सहाबा इकराम ने अर्ज़ किया अगर कोई शख़्स दो लड़कियों की परवरिश करे तो फ़रमाया उसके लिए भी यही अज्र व सवाब यहां तक कि कुछ लोगों ने सवाल किया कि अगर कोई शख़्स एक ही लड़की को पाले तो। तो जवाब में आपने फ़रमाया कि उसके लिए भी यही सवाब है। मिशक़ात जि.2 स. 423

बेटियां जहन्नम से पर्दा बनेगी

हदीस :- हज़रते आयशा ने बयान फ़रमाया मेरे पास एक औरत अपनी दो बेटियों को लेकर भीक मांगने के लिए आयी। तो एक खुजूर के सिवा उसने मेरे पास कुछ नहीं पाया। वही एक खजूर मैंने

उसको दे दी।

तो उसने उस खुजूर को अपनी दोनों बेटियों के दरमियान तक़सीम कर दिया। और ख़ुद नहीं खाया। और चली गई। उसके बाद जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मकान में तशरीफ़ लाये और मैंने उस वाक़िया का तज़किरा हुज़ूर से किया। तो आपने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स इन बेटियों के साथ मुबतिला किया गया और उसने उन बेटियों के साथ अच्छा सुलूक किया तो यह बेटियां उसके लिए जहन्नम से पर्दा और आड़ बन जायेंगी।

(मिशक़ात स. 421 जि. 2)

इसी तरीक़े से लड़के की पैदाइश की ख़ुशी में नवाफ़िल पढ़ना, फ़ातिहा दिलाना और सदक़ा व ख़ैरात सवाब का काम है। और ख़ुशी में इस हद तक मिठाई बांटना रिश्तेदारों और क़ुराबतदारों में जितने की इस्तिताअत रखता हो सही है। मगर बिरादरी के डर से नाक कटने की ख़ौफ़ से मिठाई तक़सीम करना बिल्कुल बे फ़ायदा है। और सूदी क़र्ज़ा वग़ैरा लेकर यह काम किये तो आख़िरत का गुनाह भी है। इसलिए इस रस्म को बन्द करना चाहिए।

पैदाइश के बाद गाना बजाना जो औरतें करती हैं यह हराम है क्योंकि औरत की आवाज़ का भी ग़ैर महरमों से पर्दा होना ज़रूरी है।

डोम मीरासी वग़ैरा जो गाना बजाना करके मुंह मांगा इनाम ले जाते हैं। इन डोम मीरासी वग़ैरा को देना हरगिज़ जायज़ नहीं। क्योंकि उनकी हमदर्दी करना दरअसल उनको गुनाह पर बढ़ावा देना है। अगर इन मौक़ों पर उन्हें कुछ न मिले तो यह तमाम लोग इन हराम पेशों को छोड़कर हलाल कमाई हासिल करेंगे।

बहन, बहनोई, सास, ससुर या दीगर अहले क़ुरावत की ख़िदमत करना बेशक सवाब का काम है। मगर उस वक़्त जब अल्लाह और उसके रसूल की रज़ा के लिए किया जाये। अगर दुनिया के नाम नुमूद और दिखावे के लिए हों तो बिल्कुल बेकार हैं। और इस मौक़े पर ख़ुसूसन किसी की नीयत रजाये इलाही के लिए नहीं होती-महज़ रस्म की पाबंदी और दिखावे के लिए सब कुछ होता है। वरना क्या ज़रूरत है कि छोछक के आगे बाजा भी हो और दुनिया को भी जमा

किया जाये और फिर मालदार लोग इस ख़र्च को वर्दाश्त कर लेते हैं। मगर ग़रीब मुसलमान इन रस्मों को पूरा करने के लिए या तो सूदी क़र्ज़े लेता है या घर रहन करता है। (गिरवी रखता है)

लिहाज़ा इन तमाम मसारिफ़ को बन्द करना निहायत ज़रूरी है। हज़ारहा मौक़ों पर अपनी लड़कियों और बहनों को इसलिए दें कि यह रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुक्म है। मगर इन रस्मों को मिटा दें। मगर आज हालत यह है कि अगर बच्चा पैदा होने पर दुल्हन के मैके से ये रस्में पूरी न की जायें तो सास नंद के तानों से लड़की की ज़िन्दगी वबाल हो जाती है। और घर बर्बाद हो जाते हैं। अगर यह रस्में मिट जायें तो इन लड़ाइयों का दरवाज़ा ही बन्द हो जायेगा।

बच्चे की विलादत के बाद इस्लामी रस्में

बच्चे का वालिदैन पर हक़ यह है कि सबसे पहले उसे ग़ुस्ल दें। नाल काटें फिर पहले उसके कानों को और कानों के ज़रिये उसके दिल व दिमाग़ और अल्लाह तबारक व तआला और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यारे नाम और शहादते तौहीद व रिसालत और ईमान व नमाज़ की दावत ब पुकार से आशना करें।

जैसा कि हदीसे मुबारका से साबित है -

इमामे हसन से रिवायत है -

हदीस :- हज़रत हसन बिन अली रज़ि. से रिवायत है कि जिस बच्चे के दाहिने कान में तकबीर कही जाये तो उसे इन्शा अल्लाह उम्मे सिबयान की बीमारी नहीं होती। दूर हो जाती है।

मसअला - बहारे शरीअत में मज़कूर है कि ‘‘जब बच्चा पैदा हो तो मुस्तहब यह है कि उसके कान में अज़ान व अकामत कही जाये।

(बहारे शरीअत हि. 15 स. 153)

हिकमते अज़ान :-

अज़ान में जिस तरह ग़ज़बे इलाही को रहमत में तबदील और तूफ़ानी आंधी, बारिश, आगे से निजात और क़ब्र में मुर्दा की वहशत को दूर करती है। इसी तरह शैतान जो कि बच्चे के जिस्म में खून की

तरह दौड़ता है। और गर्दिश करता है। तो इन्शा अल्लाह अज़ान बच्चे को शैतान से निजात दिलायेगी।

बच्चा जब पैदा होता है तो शैतान उस पर पहले से घात में लगा हुआ होता है। लेकिन जब बच्चे के कान में अज़ान कही जाती है तो वो शैतान को कमज़ोर कर देती है। और वो उसे सुनकर आग बगूला हो जाता है।

अज़ान की हिकमत यह भी है कि उस बच्चे को शुरू ही से अल्लाह और इस्लाम की तरफ़ और अल्लाह की इबादत की तरफ़ दावत दी जाये। तो शैतान की दावत से पहले रहमान की दावत दी जाये।

इरशादे नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है कि शैतान बवक्ते पैदाइश ही बच्चे को कचोके लगाता है।

नबी-ए-मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बच्चे के कान में अज़ान व अक़ामत को सुन्नत क़रार देकर मुसलमानों पर यह एहसान फ़रमाया कि इस तरह वो अपने बच्चे को शैतान और उसके कचोके और वसवसों से महफ़ूज़ व मामून कर लें।

अज़ान व अक़ामत के ज़रिये बच्चे की रूह जिस पर अभी दुनिया के मैल कुचैल का कोई असर नहीं है। अनवार, तौहीद से मुनव्वर होती है।

चूंकि बच्चे के कान में अज़ान व अक़ामत कहने का राज़ यह है कि इन्सान के कान में सबसे पहली आवाज़ ऐसे कलेमाते आलिया के पड़े जो अल्लाह की अज़्मत व किबरियाई पर मुश्तमिल हों। और वो कलमा-ए- शहादत उसके कान में पड़ जाये जो इस्लाम में दाख़िल होने का ज़रिया। तो या तो एक क़िस्म की तलक़ीन है कि जब वो दुनिया में आ रहा है तो उसको इस्लाम के शिआर की इत्तिला हो जाये। जैसेकि जब इन्सान दुनिया से रूख़सत होता है तो उसको कलमा-ए-तौहीद की तलक़ीन की जाती है।

अज़ान का असर दिल पर पड़ता है और वो चाहे महसूस न करे लेकिन उसका असर उस पर ज़रूर होता है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि हर बच्चा अल्लाह तआला की तख़लीक़े फ़रमूदा फ़ितरत के

मुताबिक़ होता है। चूंकि अज़ान व अक़ामत सुनाकर उसे फ़ितरत की याद ताज़ा करा दी जाती है। उसे अल्लाह तआला की किबरियाई उसकी वहदानियत और प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिसालत की यानी दो शहादतों की तलक़ीन की जाती है जो इस्लाम में दाख़िल होने का पहला ज़ीना है।

हुज़ूर सदरूश्शरीआ वदरूत्तरीक़ा अलैरहमह अपनी तसनीफ़ बहारे शरीअत में फ़रमाते हैं -

जब बच्चा पैदा हो तो उसके कान में अज़ान व अक़ामत कही जाये। बेहतर यह है कि दाहिने कान में चार मर्तबा अज़ान और बायें में तीन मर्तबा अक़ामत कही जाये।

बहुत से लोगों में रिवाज है है कि लड़का पैदा होता तो अज़ान कही जाती है और लड़की पैदा होती है तो नहीं कहते यह न चाहिए। बल्कि अगर लड़की पैदा हो जब भी अज़ान व अक़ामत कही जाये।

(बहारे शरीअत जि.5 स. 153)

बच्चे को तहनीक देना -

सहाबा इकराम रज़ि. का तरीक़ा यह था कि जब कोई बच्चा पैदा होता तो उसे ख़िदमते अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में लाते। हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खुजूर अपने दहने मुबारक में चबाकर बच्चे के मुंह में डाल देते। जिसे तहनीक कहते हैं।

इसी तरह दहने मुबारक की बरकते बच्चे को हासिल हो जाती। और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रहमत बार दुआओं से मालामाल हो जाते।

जैसाकि हदीसे मुबारका से साबित है -

हदीस :- हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रज़ि. बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बच्चे लाये जाते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनको बरकत की दुआ देते और घुट्टी देते।

हदीस :- हज़रते अबू मूसा रज़ि. से मरवी है कि मेरे यहां एक

बच्चा पैदा हुआ उसको नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में लाया। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसका नाम इब्राहीम रखा और छुहारा चबाकर उसके तालू में चिपकाया। और उसके लिए बरकत को दुआ की। उसको मुझे दिया। और यह अबू मूसा के सबसे बड़े बेटे थे।

तहनीक मतलब :-

तहनीक का मतलब यह है कि छुहार चबाकर बच्चे की तालू में चिपका दे और मुस्तहब यह है कि जब बच्चा पैदा हो तो उलमा व मशाइख व स्वालेहीन में से किसी की ख़िदमत में पेश किया जाये। और वो खुजूर या कोई मीठी चीज़ चबाकर उसके मुंह में डाल दे।

तहनीक की हिकमत :-

इस में हिकमत यह है कि इसमें ईमान की नेक फ़ाल है। क्योंकि खुजूर उस दरख़्त का फल है जिसको सरवरे कौनेन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मोमिन और उसकी हलावत से तशवीह दी हैं। खुसूसन जब तहनीक देने वाला अहले फ़ज़्ल, उलमा व स्वालेहीन में से हो। क्योंकि सबसे पहले इन हज़रात के थूक का हिस्सा नौ मौलूद के पेट में पहुंचता है।

यह अमरे मुसल्लम है कि सइयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लुआबे दहने मुबारक की बरकत से हज़रते अब्दुल्ला बिन जुबैर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेशुमार फ़ज़ाइल व कमालात से मुस्तफ़ीज हुए। कुराने करीम के क़ारी व जलीलुल क़द्र सहाबी हुए।

ऐसे ही अब्दुल्ला बिन अबी तलहा रज़ि. बहुत बड़े आलिम और फ़ाज़िल थे। और सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लुआबे दहन शरीफ़ की बरकत से हर चीज़ में पेश-पेश थे।

तफ़हीमुल बुख़ारी शरह सहीह बुख़ारी जि. 8 स. 551

आला हज़रत रह. फ़तावा -ए - रिज़विया में इसकी बरकत यूं बयान फ़रमाते हैं। छुहारा वग़ैरा कोई मीठी चीज़ चबाकर उसके मुंह में डाले कि हलावते अख़्लाक़ की फाले हसन है।

(फ़तावा - ए- रिवज़विया जि. 10 स. 46)

कोई अन्दाज़ा कर सकता है उनके जोरे बाज़ू का
निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती है तक़दीरें।

(डा. इक़बाल)

न मकतब से है न कालेज के दर से पैदा
इल्म होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा।

बच्चे के सर के बाल मुण्डवाना

बच्चे के बाल मुण्डवाने की बहुत सी जगहों पर रस्म यह होती है कि नाई सर मोंडने के बाद सब कुनबा व बिरादरी वालों के सामने कटोरी हाथ में लेकर अपना हक मांगता है। और लोग उस कटोरी में पैसे डालते हैं। फिर वो घर वालों के ज़िम्मे एक क़र्ज़ की तरह होता है जब उन देने वालों के यहां अक़ीक़ा होगा तो यह लोग उतनी ही रक़म उनके यहां के नाई की कटोरी में डालेंगे। इसी तरह से सूप या थाली में कच्चा अनाज वग़ैरा रखकर नाई के सामने रखा जाता है। इसी तरह से अक़ीक़ा में लोगों ने यह रस्म मुक़र्रर कर ली है कि जिस वक़्त बच्चे के सर पर उस्तरा रखा जाता है फौरन उसी वक़्त बकरा भी ज़िबह किया जाये। ये सब रस्में बिल्कुल लग्व हैं। शरीअत में फ़क़त इतनी बात है कि नाई को सर मोण्डने की उजरत दे दी जायें। और बकरा ख़्वाह सर मोंडने से पहले ज़िबह करें या बाद में सब जायज़ व दुरूस्त है। (जन्नती ज़ेवर स. 117)

बल्कि बच्चे पर वालिदैन का हक़ यह है कि बच्चे के पैदाइशी बाल मोंडने और फिर उस बाल के एवज़ चांदी सदक़ा करे। कि यह अमल हदीसे पाक से साबित है। नीज सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने प्यारे नवासों के लिए हज़रते सइयदा बीबी फ़ातिमा रज़ि. को ऐसा करने का हुक्म फ़रमाया।

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि. से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रते हसन रज़ि. की तरफ़ से एक बकरी (अक़ीका) में ज़िबह की और फ़रमाया -

''ऐ फ़ातिमा इनका सर मोंड कर बालो के बराबर सदक़ा करो''।

तो उनका वज़न एक दिरहम या एक दिरहम से कुछ कम था।

(जामे तिर्मिज़ी जि. 01 स. 756)

इमाम मालिक अपनी किताब मोअत्ता में जाफ़र बिन मुहम्मद से रिवायत करते हैं उन्होंने अपने वालिद से रिवायत किया है कि हज़रते फ़ातिमा रज़ि. ने हज़रत हसन हज़रत हुसैन और हज़रते ज़ैनब हज़रते उम्मे कुलसूम रज़ि. के सरों के बाल का वज़न कराकर इतनी मिक़दार में चांदी सदक़ा की।

याहया बिन बुकैर हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सातवें दिन हज़रत हसन व हुसैन रज़ि. का सर मोंडने का हुक्म दिया।

चुनांचे उनका सर मोंड दिया गया और बालों के वज़न बराबर चांदी सदक़ा की। नीज़ सर मुण्डवाने के बाद बच्चे के सर पर ज़ाफ़रान भी मलनी चाहिए। जैसा कि हदीसे पाक से साबित है -

हदीस - हज़रते बुरीदा रज़ि. से रिवायत है कि दौरे जाहिलियत में जब किसी के घर लड़का पैदा होता तो बकरी ज़िबह करके उसका ख़ून बच्चे के सर लगाया जाता था। जब दौरे इस्लाम आया तो हम सातवें दिन बकरी ज़िबह करते हैं बच्चे का सर मोंडवाते हैं। और उस पर ज़ाफ़रान लगाते हैं। (अबू दाऊद, मिशकात शरीफ़ स. 363)

इस हदीस की शरह में मुफ्ती अहमद यार खां नईमी रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस्लाम में बच्चे के सर पर बकरी का ख़ून लेपते कि वो नजिस है। उसके बजाये बच्चे के सर पर ज़ाफ़रान का लेप दें मगर मोंडने के बाद। (मिरअतुल मनाजीह जि. 06 स. 7)

आला हज़रत फ़तावा-ए-रिज़विया में फ़रमाते हैं -

''सर के बाल उतरवाये बाल के बराबर चांदी तौल कर ख़ैरात करे सर पर ज़ाफ़रान लगाये।''

पस अक़ीक़ा करके बच्चे के बाल मोंडे जायें और बालों को चांदी से तौल कर सदक़ा किया जाये। पानी में ज़ाफ़रान भिगोकर बच्चे के सर पर मला जाये। और सातवें दिन उसका नाम रखा जाये।

(नुजहतुल क़ारी शरह सहीह बुख़ारी जि. 5 स. 469)

फ़ायदे :- बच्चे की पैदाइश के सातवें दिन उसके बाल मुंडवा देने चाहिए। और उन बालों के वज़न के बराबर चांदी ग़रीबों और मिसकीनों में सदक़ा कर देनी चाहिए। ऐसा करना प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सुन्नत है।

नीज़ इसमें बहुत से फवाइद भी हासिल होते हैं।

सर के बाल मुण्डवाने में सेहत व तिब के लिहाज से यह फ़ायदा है कि बच्चे का सर मुण्डवाने से उसे कुव्वत हासिल होती है।

सर के मसामात खुल जाते हैं।

साथ ही उससे निगाह और समाअत और सूंघने की कुव्वत को फ़ायदा पहुंचता है।

बच्चों के बालों के बराबर चांदी सदक़ा करने से मुआशरा में बाहमीं इमदाद का जज़्बा पैदा होता है।

इससे हाजतमन्दों की ज़रूरत पूरी होती है।

अक़ीक़ा और ख़तना की रस्में

आम तौर अक़ीक़ा और ख़तना के मौक़े पर यह रस्में होती हैं कि बहुत सारी जगहों पर अक़ीक़ा करते ही नहीं। बल्कि उसकी जगह पर छटी करते हैं। और यह कि बच्चे कि पैदाइश के छटे दिन रात के वक़्त औरतें जमा होकर मिलकर गाती बजाती हैं फिर मीठे चावल तक़सीम किये जाते हैं। और गीत निहायत ही बेहूदा क़िस्म के गाये जाते हैं। यह रस्म ख़ालिस हिन्दुओं की है। और जो लोग अक़ीक़ा करते भी हैं तो वो अपनी बिरादरी के लिहाज़ से जानवर ज़िबह करते हैं। और अक्सर बड़ी बिरादरी के लोग छः सात जानवर ज़िबह करके तमाम गोश्त बिरादरी में तक़सीम कर देते हैं। या फिर खाना पकाकर बहुत बड़ी दावत करते हैं। और यह भी मशहूर है कि दुल्हन का पहला बच्चा मैके में पैदा हो। और अक़ीक़ा वग़ैरा का सारा ख़र्च दुल्हन के मां-बाप करें। अगर वो ऐसा न करें तो सख़्त बदनामी होती है।

इन रस्मों की ख़राबियां

छठी करना ख़ालिस हिन्दुओं की रस्मे है। जो उन्होंने अक़ीक़ा के मुक़ाबले में शुरू की है। औरतों का गाना बजाना हराम है और फिर गाने वालियों को मीठे चावल खिलाना हराम का बदला है। अक़ीक़ा और ख़तना में इस तरह से फुज़ूल की रस्में और फुज़ूल के ख़र्च करने की वजह से लोग यह सुन्नत ही छोड़ देंगे। अक़ीक़ा और ख़तना करना सुन्नत है। और इबादत है। और इबादत को इसी तरह से किया जाये जैसा करने का शरीअत ने हुक्म दिया। नबी -ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से साबित है। अपनी तरफ़ से इसमें बढ़ावा देना। और फुज़ूल और हराम रस्में दाख़िल करना बेकार और सख़्त गुनाह है।

इस्लामी तरीक़े (अक़ीक़ा और ख़तना)

अक़ीक़ा करने का सुन्नत तरीक़ा यह है कि बच्चे की पैदाइश के सातवें रोज़ अक़ीक़ा हो।

मसअला :- अक़ीक़ा के लिए सातवां दिन बेहतर है। और सातवें दिन न कर सकें तो जब चाहें करें। सुन्नत अदा हो जायेगी। बेहतर यह है कि जिस दिन बच्चा पैदा हो उस दिन को याद रखें। इससे एक दिन पहले वाला दिन जब आये वो सातवां दिन होगा। मसलन जुमा को पैदा हुआ तो जुमेरात सातवां दिन है। (बहारे शरीअत वग़ैरा)

मसअला :- लड़के के अक़ीक़े में दो बकरे और लड़की के अक़ीक़े में एक बकरी ज़िबह की जाये। यानी लड़के में नर जानवर और लड़की में मादा मुनासिब है। और लड़के के अक़ीक़ा में बकरियां और लड़की में बकरा किया जब भी हर्ज नहीं। लड़के के अक़ीक़ा में दो बकरी की जगह एक ही बकरी किसी ने ज़िबह की तो यह भी जायज़ है। और अक़ीक़ा में गाय ज़िबह की जाये तो सात हिस्सों में दो हिस्से लड़के के लिए और एक हिस्सा लड़की के लिए काफ़ी है। गाय की कुर्बानी होती हो तो इसमें अक़ीक़ा की शिरकत हो सकती है।

ज़रूरी तम्बीह :- अक़ीक़ा फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है बल्कि सिर्फ़

सुन्नते मुस्तहिबा है। ग़रीब आदमी को हरगिज़ न चाहिए कि किसी से क़र्ज़ लेकर अक़ीक़ा करे।

ख़तना की रस्में

अक़ीक़ा या ख़तना के मौक़े पर बच्चे की मां अपने मैके या अज़ीज़ रिश्तेदारों के यहां मिठाई लेकर भात मांगने जाती है। भात मांगने की कोई अस्ल नहीं है। हाँ अगर देने वाला हदियतन (बतौरे तोहफ़ा) दे तो कोई हर्ज नहीं।

इसी तरीक़े से ख़तना और अक़ीक़ा के मौक़े पर सेहरा पढ़ते हैं और सेहरे में औरतों और मर्दों का ख़िलत मिलत होता है। तो यह बेपर्दगी है। इस तरह की नाजायज़ और फ़ुज़ूल रस्मों से एहतिराज़ लाज़मी है।

नीज़ ऐसे मौक़ों पर ढोल-ताशा, बैण्ड वग़ैरा गाने बाजे के इन्तिज़ामात करते हैं। यह नाजायज़ व हराम है। इनसे परहेज़ लाज़मी है।

मसअला :- ख़तना की तक़रीब में रिश्तेदारों के यहा से जोड़े वग़ैरा आते हैं। सेहरे पर रूपये वग़ैरा दिये जाते हैं। और जोड़े भी तरह-तरह के होते है। इनमें से जिन चीज़ों के मुतअल्लिक़ मालूम हो के बच्चे के लिए मसलन छोटे कपड़े जो बच्चों के लिए मुनासिब हैं। इसी बच्चे के लिए वरना वालिदैन के लिए। (दुर्रे मुख़तार)

और भेजने वाले ने बनाम जोड़े या तोहफ़े भेजे हैं। तो जिसके लिए जो चीज़ आई है वही ले सकता है। दूसरा नहीं ले सकता। यहां तक मुलाज़िमीन के लिए जो जोड़े वग़ैरा आये वो उन्हीं को दिये जायें। रोकना या किसी और को न देना चाहिए।

मसअला :- ख़तना करना सुन्नत है। और यह इस्लाम के शिआइर में है कि मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम में इससे इम्तियाज़ होता है। इसलिए उर्फ़े आम में इसे मुसलमानी भी कहते हैं। ख़तना की मुदत्त सात साल से बारह साल की उम्र तक है। और कुछ उलमा ने यह फ़रमाया है कि पैदाइश से सातवें दिन के बाद में ख़तना करना जायज़ है। (आलमगीरी)

उमूमन मुसलमानों का अमल भी इसी पर है।

मसअला :- बच्चा पैदा ही ऐसा हुआ कि ख़तना में जो खाल काटी जाती है। वो उसमें नहीं हैं। तो ख़तना ही हाजत ही नहीं।

मसअला :- सुना जाता है बल्कि देखा भी गया है कि जिस बच्चे में पैदाइशी ख़तना की खाल नहीं होती। उसके बाप औलिया वग़ैरा अपने आइज्जा व अक़ारिब को बुलाते हैं और ख़तना के क़ायम मक़ाम पान की गिलौरी काटी जाती है। गोया इससे ख़तना की रस्म अदा की गई है। यह एक लग़्व हरकत है। जिसका ना कुछ हासिल है ना कुछ फ़ायदा। (सुन्नी बहिशती ज़ेवर)

नोट :- हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़तना शुदा पैदा हुए थे

पाकी और नापाकी का बयान

बच्चा पैदा होने के बाद जो खून आगे के मक़ाम से खारिज होता है। उसे निफ़ास कहते हैं।

मसअला :- निफ़ास में कमी की जानिब कोई मुद्दत मुक़र्रर नहीं। आधे से ज़्यादा बच्चा निकलने के बाद एक आन भी ख़ून आया तो वो निफ़ास है। और ज़्यादा से ज़्यादा उसका ज़माना चालीस दिन और रात है। और निफ़ास की मुद्दत का शुमार उसी वक़्त से होगा कि आधे से ज़्यादा बच्चा निकल आया।

(बहारे शरीअत)

मसअला :- किसी को चालीस दिन से ज़्यादा ख़ून आया था। तो उसके पहली बार बच्चा पैदा हुआ है। या यह याद नहीं कि इससे पहले बच्चा पैदा होने पर कितने दिन खून आया था। तो चालीस दिन रात निफ़ास है। बाक़ी इस्तिहाज़ा है और जो पहली आदत मालूम हो तो आदत के दिनों तक निफ़ास है। बाक़ी इस्तिहाज़ा।

जैसे आदत तीन दिन की थी और इस बार पैंतालीस दिन आया तो तीस दिन निफ़ास के हैं और पंद्रह दिन इस्तिहाज़ा के।

(बहरे शरीअत)

निफ़ास का हुक्म :- निफ़ास वाली औरत को क़ुरआन मजीद देखकर या ज़बानी पढ़ना और उसका छूना अगरचे उसकी जिल्द या

चोली या हाशिया को हाथ या उंगली की नोक या बदन का कोई हिस्सा लगे यह सब हराम है। ऐसी औरत को मस्जिद में जाना हराम है।

इस हालत में नमाज़ पढ़ना रोज़ा रखना भी हराम है।

(बहारे शरीअत वग़ैरा)

ज़रूरी मसअला :- निफ़ास में औरत को ज़च्चा खाने से निकलना जायज़ है। उसको साथ खिलाने चिंकी वग़ैरा और इसी तरह कमरून्निसा, बदरून्निसा जहां आरा, वग़ैरा नाम न रखें। बल्कि लड़कियों के नाम उम्मेहातुल मोमिनात, सहाबियात के नाम पर रखे, जैसे कनीज़ फ़ातिमा, आमिना, आयशा, ख़दीजा, ज़ैनब, रूकय्या, मरियम, कुलसूम वग़ैरा। (इस्लामी ज़िन्दगी स. 17)

हदीस :- हज़रत अबू वहब जुसमी ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अम्बिया के नामों पर नाम रखो। (अबू दाउद, अनवारूल हदीस स. 315)

हदीस :- इब्ने सअद तबक़ात में उसमान उमरी रज़ि. से मुरसलन रावी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

''तुम में किसी का क्या नुक़सान है अगर उसके घर में एक मुहम्मद, या दो मुहम्मद या तीन मुहम्मद हों।

मज़कूरा हदीस के तहत आला हज़रत फ़रमाते हैं :-

''वलिहाज़ा फ़क़ीर ने अपने सब बेटों भतीजों का अक़ीक़े में सिर्फ़ मुहम्मद नाम रखा। फिर नामे अक़दस के हिफ़्ज़ व आदाब और बाहम तमीज के लिए उर्फ़ जुदा मुकर्रर कर दिये। बिहम्देहि तआला फ़क़ीर के यहां पांच मुहम्मद मौजूद हैं। और पांच से ज़ाइद अपनी राह गये।'' (अहकामे शरीअत जि. 1 स. 82)

एक हदीस में है -

''कि अल्लाह तआला को तमाम नामो में से अब्दुल्ला और अब्दुर्रहमान सबसे से ज़्यादा पसन्द हैं।'' लेकिन यह याद रहे कि जिनके नाम रहमान, सत्तार, ग़फ़्फ़ार, करीम, रहीम वग़ैरा हों जो कि अल्लाह के सिफ़ाती नाम हैं इनमें अब्द लगाना ज़रूरी है। जैसे

अब्दुर्रहमान, अब्दुस्सत्तार, अब्दुर्रहीम वग़ैरा। बग़ैर अब्द लगाये हुए पुकारना सख़्त मना है।

अल्लाह तआला क़ुराने करीम में इरशाद फ़रमाता है -

आयत का तर्जुमा :- और आपस में तआना न करो और एक दूसरे के बुरे नाम रखो।

हज़रते नाफ़ेअ ने हज़रत इबने उमर रज़ि. से रिवायत की।

नबी - ए- करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदते मुबारका थी कि बुरे नामों को बदल दिया करते थे।

तिर्मिज़ी शरीफ़ जि. 2, बाब 335, हदीस 746, स. 301

अबू दाऊद जि. 3 बाब 486, हदीस 1517, स. 551

प्यारे इस्लामी भाइयों! और बहनो! :-

इस हदीस पाक से यह दर्स हासिल है कि जिस वक़्त यह मालूम हो कि मेरा नाम ग़लत है। उसी वक़्त नाम बदलने की कोशिश करनी चाहिए। नीज़ यह भी दर्स हासिल करने की ज़रूरत है कि अगर आप तालीमयाफ़्ता हैं तो अपने बच्चों के नाम खुद मुन्तख़ब कर सकती हैं। वरना किसी आलिमे दीन, या आलिम से राबिता क़ायम करके अपने बच्चों के अच्छे नाम तजवीज़ करें।

बहुत से लोग अपने बच्चों के नाम ऐसे रखते हैं जो पुकारने में और सुनने में तो बहुत ही भले मालूम होते हैं। लेकिन यह या तो नाजायज़ हैं। या फ़िर जिनके कोई माना नहीं होते।

चुनांचे आला हज़रत ने अहकामे शरीअत में ऐसे बहुत से नामों के लिए लिखा है -

फ़रमाते हैं --

मो. नबी, अहमद नबी, नबी, अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बेशुमार दुरूदें या अल्फ़ाज़े करीमा हुज़ूर ही पर सादिक़ और हुज़ूर ही को ज़ेबा है। (अहकामे शरीअत जि. 1 स. 73)

यूं ही यासीन, व ताहा नाम रखना मना है। कि वो असमाये इलाहिया व असमाये मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसे नाम हैं जिनके माना मालूम नहीं क्या अजब कि उनके माना वो हों

जो गैरे ख़ुदा या रसूल में सादिक़ न आ सकें। तो उनसे एहतिराज़ लाज़िम है। (अहकामे शरीअत जि. 1 स. 75)

यूं ही गफ़ूरूद्दीन भी सख़्त क़बीह, व सनीह है। ग़फ़ूर के माना मिटाने वाला छिपाने वाला। अल्लाह तआला ग़फ़ूरे जुनूब है। यानी अपनी रहमत से अपने बन्दों के जुनूब मिटाता उयूब (ऐबों) को छुपाता है। तो ग़फ़ूरूद्दीन के माना हुए दीन को मिटाने वाला। यह ऐसा हुआ जैसे शैतान नाम रखना। जिसे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तबदील फ़रमा दिया।

(अहकामे शरीअत जि. 1 स. 76)

बच्चे को दूध पिलाना

कुराने पाक में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है -

तर्जुमा :- और मांएं दूध पिलाएं अपने बच्चों को पूरे दो बरस।

(सूर-ए-बक़रा-आयत 333)

मसअला :- बच्चा को दो बरस तक दूध पिलाया जाये। उससे ज़्यादा की इजाज़त नहीं। दूध पीने वाला लड़का हो या लड़की। और यह जो अवाम में मशहूर है कि लड़की को दो बरस और लड़के को ढाई बरस तक दूध पिला सकते हैं। यह सही नहीं है। यह हुक्म दूध पिलाने का है। और निकाह हराम होने के लिए ढाइ बरस का ज़माना है। यानी दो बरस के बाद अगरचे दूध पिलाना हराम है। 3 मगर ढाई बरस के अन्दर अगर दूध पिला देगी। हुरमते निकाह साबित हो जायेगी। और उसके बाद अगर पिया तो हुरमते निकाह नहीं। अगरचे पिलाना जायज़ नहीं। (बहारे शरीअत जि. 7 स. 37)

अगर किसी ख़ातून को किसी वजह से दूध नहीं आ रहा हो या कम आता हो या किसी ऐसी बीमारी में मुब्तिला हो जिससे बच्चे को दूध पिलाने में नुक़सान का अन्देशा हो तो ऐसी हालत में बच्चे के बाप की ज़िम्मेदारी है कि वो किसी दूध पिलाने वाली का इन्तिज़ाम करे। लेकिन ख़्याल रहे कि दूध पिलाने वाली मुस्लिम सहीहउल अक़ीदा नेक सीरत ख़ातून हो कि -

बच्चे को दूध पिलाने वाली की आदत का बच्चे पर बहुत असर पड़ता है। इसलिए इमामे ग़ज़ाली रह. अपनी किताब कीमियाए सआदत में फ़रमाते हैं -

''ज़रूरी है कि इस बात की कोशिश करे कि उसको दाया नेक अच्छे अतवार वाली और हलाल रिज़्क़ कमाने वाली हो क्योंकि दाया के बुरे अख़लाक़ भी इसमें असर अन्दाज़ होते हैं। और जो दूध हराम से हासिल हो वो नापाक है। जब उस हराम दूध से बच्चे का गोश्त-पोस्त बनेगा तो बादे बुलूग़ उसका असर ज़ाहिर होगा।

(कीमिया-ए-सआदत स. 459)

हिकायत :- तफ़सीरे रूहुल बयान में है कि हज़रत इमाम शेख इबने मोहम्मद रज़ि. अपने घर में आये तो देखा कि उनके बेटे अबुल मुआली को कोई दूसरी औरत दूध पिला रही है। आपने उससे बच्चे को छीन लिया। बच्चे के मुंह में उंगली डालकर तमाम दूध उल्टी करा दिया। और फ़रमााय कि अच्छे दूध से शराफ़त पैदा होती है। और जांकुनी में आसानी। जब अबुल मुआली रज़ि. जवान हुए तो बहुत बड़े आलिम बने। लेकिन कभी-कभी आप मनाज़िरे में तंग दिल हो जाते थे। और फ़रमाते थे कि शायद यह उसी दूध का असर मेरे पेट में रह गया है। जिसका यह नतीजा है। (तफ़सीरे रूहुल बयान)

आजकल दूध पिलाने वाली शरीफ़ दाया (औरत) का मिलना बहुत मुश्किल हो गया है। तो अगर ऐसी किसी दाया का इन्तिज़ाम न हो सके तो बच्चे के लिए गाये का दूध सही है। मगर उबाल ज़रूर लें।

आज के ज़माने में अक्सर औरतें अपने बच्चे को अपना दूध जान बूझकर नहीं पिलाती हैं। कि उनकी अपनी खूबसूरती बच्चे को दूध पिलाने से चली जायेगी। बल्कि वो इसके बदले बग़ैर किसी मजबूरी के गाय, भैंस, या फिर डिब्बे वग़ैरा का दूध पिलाती है। तो सिर्फ़ अपने जिस्म की ख़ूबसूरती को बरक़रार रखने के लिए। बच्चे को इसअ़जीम नेअमत से महरूम रखना बच्चे पर जुल्म करना है।

हदीस शरीफ़ में हैं -

हज़रत खादिमुल हुफ्फाज इमामे अजल जलालुद्दीन सिउती रज़ि.

अपनी मशहूर किताब 'शरहुस्सुदूर' में हज़रते अबू उमामा रज़ि. से रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया -

"शबे मेअराज में मैंने कुछ औरतें ऐसी देखीं जिनके पिस्तान लटके हुए और सर झुके हुए थे। उनको सांप डस रहे थे। जिबरील अलै. ने मुझे फ़रमाया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये वो औरतें हैं जो अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाती थी।

(शरहुस्सुदूर बाबे अजाबे क़ब्र स. 153)

नीज माहिर अतिब्बा की तहक़ीक़ के मुताबिक़ मां का दूध बच्चे की सेहत के लिए ज़्यादा मुफ़ीद है। और मां के लिए भी पिलाना मुफ़ीद है। जो औरतें बच्चों को अपना दूध पिलाती हैं। तो इससे बच्चे ज़्यादा सेहतमंद होते हैं। और खुद मांएं भी तरह-तरह की बीमारियों से महफ़ूज़ रहती हैं।

हदीस शरीफ़ में है -

रिवायत है उम्मुलमोमिनीन हज़रते आयशा सिद्दीका रज़ि. से कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया।

"जो औरत अपने बच्चे को दूध पिलाती है और जब बच्चा मां के पिस्तान से दूध की चुस्की लेता है तो हर चुस्की के बदले उस औरत को एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब दिया जाता है। जब औरत बच्चे को दूध छुड़ाती है तो आसमान से निदा आती है ऐ नेक ख़ातून। तेरी पिछली ज़िन्दगी के सारे गुनाह माफ़ कर दिये गये। अब तू नये सिरे से नयी ज़िन्दगी शुरू कर।"

बच्चे को दूध पिलाने का तरीक़ा

मां कोशिश करें कि बावुज़ू होकर दूध पिलाए।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ दूध पिलाए।

दूध पिलाते हुए दुरूदे पाक का विर्द करती रहे।

दूध पिलाते वक़्त पर्दे का एहतिमाम ज़्यादा करे कि किसी की नज़र उस पर न पड़े। आजकल अक्सर औरतें इस बात का ख़्याल

नहीं करती हैं किसी के भी सामने दूध पिलाने लगती हैं।

दूध पिलाते वक़्त हम्द, नात व मनक़बत सुनती या गुनगुनाती रहे।

दूध पिलाते वक़्त अपने ज़हन को अच्छी बातों में मश्ग़ूल रखे।

क्योंकि गन्जुल असरार में लिखा है--

हज़रत सुल्तान बाहू रह. की वालिदा माजिदा ने अपने उस लख़्ते जिगर को हमेशा बावुज़ू होकर दूध पिलाया। जिससे आपके रंगो रेशे में इबादत की पाकीज़गी सरायत कर गयी।

इसी तरह एक बुजुर्ग जो बहुत साहिब कमाल थे और अल्लाह की मअरिफ़त में बहुत बड़ा मक़ाम रखते थे। उनके सामने किसी ने उनकी तारीफ़ की। तो उन्होंने इरशाद फ़रमाया, ''इसमें मेरी मां का कमाल है कि मेरी माँ ने मुझे हमेशा बावुज़ू होकर दूध पिलाया।''

बच्चों की तालीम व तरबियत

सबक फ़िर पढ़ सदाक़त का अदालत का,

लिया जायेगा तुझसे काम दुनिया में इमामत का।

(डा. इक़बाल)

अपने बच्चों को अच्छी तालीमो तरबियत से आरास्ता करें। मसलन जब आपका बच्चा बोलना शुरू करे तो उसे अल्लाह मुहम्मद कहना सिखायें। फिर उसे कलमा - ए- शरीफ़ सिखायें।

किताब 'हसन व हुसैन' में है -

''जब बच्चा बोलना शुरू करे तो सबसे पहले कलाम-ए-शरीफ़ सिखायें। सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

अक्सर औरतें अपने बच्चों को सुलाती है तो लोरियां गाकर या गाना वग़ैरा गाकर सुलाती हैं। या फिर क़िस्सा या कहानी वग़ैरा सुनाती हैं। बल्कि इसकी जगह पर जब अपने बच्चे को सुलाये तो दुरूद पाक पढ़कर और तज़किरा-ए-सहाबा व औलिया या ऐसे वाक़ियात जिससे बच्चे के अन्दर ईमानी जज़्बा पैदा हो। सुनाकर सुलायें। इससे बच्चे के दिल व दिमाग़ पर अच्छा असर पड़ेगा।

नीज़ ये कलेमात कहे -

हसबी रब्बी जल्लक्लाह माफ़ी क़लबी ग़ैर अल्लाह नूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुरूदे पाक पढ़े -

सल्ले अला नबी ए ना सल्ले अला मुहम्मदिन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे कुछ घरों में इस्लामी बहनें बच्चों को टाटा, बाये बाये, नोज़, आई वग़ैरा सिखाती हैं। उन्हें अव्वलन यह चाहिए कि अपने बच्चों को इस्लामी तरीक़े सिखायें। इस्लामी बातें बतायें। जिस खालिक़ ने पैदा किया उसको दुनिया में भेजा। पहले उसका नाम कहना सिखाएं। उसके अक़ीदे को मज़बूत बनायें। अल्लाह तआला के हबीब का नाम सिखाएं। ताकि आपके बच्चे के दिल में इश्क़े रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जज़्बा पैदा हो। और उसको कलमा-ए-तइएव व कलमा-ए शहादत वग़ैरा सिखाएं।

की मोहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं,

जहां चीज़ है क्या लौह क़लम तेरे हैं। सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

जब बच्चा बोलने के क़ाबिल हो तो सबसे पहले औरत को यह चाहिए कि वो कोशिश करे कि उसके बच्चे के ज़बान से जो पहला लफ़्ज़ निकले वो अल्लाह तबारक व तआला का प्यारा नाम अल्लाह हो।

क्योंकि एक रिवायत में है -

जिसका पहला और आख़िरी कलमा ला इलाहा होगा वह जन्नत में जायेगा। (फ़तावा-ए-रिज़विया)

बच्चे को पेशाब, पाख़ाना कराते वक़्त की एहतियात -

अपने बच्चे को पेशाब या पाख़ाना कराते वक़्त क़िबला रूख़ न करें। अक्सर औरतें अपने बच्चे को इस्तिन्जा कराते वक़्त इसका ख़्याल नहीं रखतीं।

बहारे शरीअत ये है -

मसअला :- बच्चे को पेशाब या पाख़ाना कराने वाले को मकरूह है कि उस बच्चे का मुँह क़िबला को हो। यह फिराने वाला गुनाहगार होगा। (बहारे शरीअत - जि. 1 हि. 2 स. 408)

नोट :- अक्सर घरों में लैटरीन क़िबला रूख़ होती है। उनका रूख़ बदल लें। वरना गुनाहगार होंगे।

दूध पीते लड़के या लड़की का पेशाब नापाक है। अक्सर औरतें इसको पाक समझती हैं। और कहती हैं कि यह दूध पीता बच्चा है। इसका पेशाब पाक है। यह ग़लत है। बल्कि दूध पीने वाला लड़का हो या लड़की उसका पेशाब निजासते ग़लीज़ा है।

क्योंकि बहारे शरीअत में है :-

मसअला :- दूध पीते लड़के या लड़की का पेशाब निजासते ग़लीज़ा है। यह जो अक्सर अवाम में मशहूर है कि दूध पीते बच्चों का पेशाब पाक है। महज़ गलत है।

(बहारे शरीअत जि. 1 हि. 2 स. 390)

(फ़तावा - ए - हिन्दिया)

सालगिरह आज कल जो यह माहौल बनता जा रहा है कि लोग अपने बच्चों की सालगिरह ईसाइयों के तरीक़े पर मना रहे हैं। और इस्लामी तहजीब को दरकिनार करा दिया। मसलन केक काटते है। मोमबत्तियां जलाते हैं। गुब्बारे फुड़वाते हैं। पार्टियां देते हैं। पार्टियों में शामिल होने वाले तमाम लोग नाच गाना करते हैं।

प्यारे इस्लामी भाइयों और बहनो! गौर करने का मक़ाम है क्या हमारे आक़ा सरकारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बज़ाते खुद अपना बर्थडे मनाया। या हज़रते अबू-बक्र सिद्दीक रज़ि. या ग़ौसे पाक शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी व ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रह. ने कभी अपना बर्थडे मनाया। नहीं हरगिज़ नहीं। तो जब हमारे आक़ा सरकारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ि. और औलिया किराम रह. ने बज़ाते ख़ुद अपने यौमे पैदाइश नहीं मनाया। तो क्या हम या हमारा बच्चा इतना मुअज़्ज़ है जिसका यौमे पैदाइश इस तरीके पर मनाया जाये।

हाँ अगर आप अपने बच्चे के पैदाइश को दिन याद रखना चाहते है तो अपने हाथ या अपने बच्चे के हाथ से सदक़ा कराये। या क़ुरान ख़्वानी कराकर या फ़ातिहा ख़्वानी कराकर भी उस याद के ताज़ा रख सकते हैं।

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी,
यह खाक़ी अपनी फ़ितरत में न नूरी है नारी है।
(डा. इक़बाल)

बचाओ मग़रिबी तहज़ीब से तुम अपनी नस्लो को,
यह वो दीमक जो मशरिक की हर बुनियाद खा लेगी।
घरों में अपने इस्लामी उसूलों को रखो ज़िन्दा
यही एक चीज़ नस्ले नौ का मुस्तक़बिल संभालेगी।

लिबास पहनाना :-

हकीकत में मिज़ाजों के बदलने की ज़रूरत है,
लिबासों के पहन लेने से उरयानी नहीं जाती।

अपने बच्चों को लिबास इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ पहनाये

अपने बच्चों को लिबास पहनाते वक़्त इस बात का ख़्याल रखें कि आप जो लिबास उसको पहना रही हैं। वो इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ हो। क्योंकि लिबास का शख़्सियत पर बहुत गहरा असर होता है। बच्चे बचपन में जैसा लिबास पहनते हैं। फिर बड़े होकर भी अक्सरो बेशतर वैसे ही लिबास का इन्तिखाब करते हैं। इस वजह से कोशिश यही करें कि आप अपने बच्चे को जो लिबास पहनाये वो सुन्नत के मुताबिक हो।

बच्चे को जानदार तस्वीर वाले लिबास हरगिज़ न पहनायें क्योंकि हदीस शरीफ़ में हैं कि

''जहाँ किसी जानदार की तस्वीर हो वहां रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते।''

और बच्चों के पास रहमत के फ़रिश्ते हर वक़्त मौजूद होते हैं। तो क्यों किसी जानदार की तस्वीर वाले लिबास पहनाकर अपने बच्चे को अल्लाह तआला की रहमत और फरिश्तों से दूर रखें।

इसी तरीक़े से मां अपने बच्चे को सादा लिबास पहनने की तरग़ीब दिलाये। ज़्यादा तेज रंग के कपड़े लड़के को न पहनाये क्योंकि सरकारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी सादा सफेद रंग

के कपड़े को ज़्यादा पसंद फ़रमाया है। हदीस शरीफ़ में है कि

"हज़रते समरा रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सफ़ेद कपड़े पहना करो। इसलिए कि वो बहुत पाकीज़ा और पसंदीदा है।

(अहमद, मिशकात, अन्वारूल हदीस स. 321)

"अच्छे लिबास और उम्दा खाने का उसे आदी न बनाये। उसे न मिल सके तो वो उस पर साबिर न रह सकेगा। वो उम्र उसकी जुस्तजू में रायगाँ कर देगा।" (कीमियाए सआदत स. 459)

नीज़ लड़के और लड़की के लिबास में तमीज़ होना अज़हद ज़रूरी है। बहुत सी औरतें इस बात का ख़्याल नहीं रखतीं। और लड़कों के कपड़े लड़कियों को लड़कियों के कपड़े लड़को को पहना देती है। यह ग़लत है। अगर कोई ऐसा करे यानी पहनाए तो उसका गुनाह पहनाने वाले पर होगा।

इस बारे में हदीस शरीफ़ में है -

अबू दाऊद ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस मर्द पर लानत की जो औरत का लिबास पहनता है। और उस औरत पर लानत की जो मर्दाना लिबास पहनती है। (इस्लामी अख़लाक़ व आदाब स. 58)

बहुत सी औरतें अपनी बच्चियों को जदीद फ़ैशन के लिबास पहनाती हैं। जिससे जिस्म के कुछ हिस्से खुले हुए होते हैं यह ग़लत है।

उनको चाहिए कि जब उनकी बच्ची कुछ बड़ी हो जाये तो उसे इस क़िस्म के आधे जिस्म वाले या बारीक कपड़े जिससे जिस्म झलकते हो न पहनायें। बल्कि बच्ची जैसे ही छः, सात बरस की हो जाये उसे दुपटटा ओढ़ने की आदत डलवायें। और शलवार कमीज़ पहनायें। इससे बच्ची की आदत बनी रहेगी। और वो पर्दे का एहतिमाम भी करेगी।

बेपर्दा मुझको आयीं नज़र चन्द बीवियां,
अकबर ज़मीं में गैरते क़ौमी से धंस गया।

पूछा जो उनसे आपका पर्दा वो क्या हुआ,
कहने लगी कि अक़्ल पे मर्दों की पड़ गया।

(अकबर इलाहाबादी)

हदीसे पाक में है -

अबू दाऊद ने हज़रते आयशा रज़ि. से रिवायत की कि असमा रज़ि. बारीक कपड़े पहनकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने आयीं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुंह फेर लिया और फ़रमाया ऐ असमा। जब औरत बालिग़ हो जाये तो उसके बदन का कोई हिस्सा दिखाई न देना चाहिए। सिवा मुंह और हथेली के।

(इस्लामी अख़लाक़ व आदाब स. 53)

एक और हदीस में है -

इमाम मालिक अलक़मा बिन अलक़मा से वो अपनी मां से रिवायत करते हैं कि हफ़्सा बिनते अब्दुर्रहमान हज़रत आयशा रज़ि. के पास बारीक दुपटटा ओढ़ कर आयीं हज़रत आयशा रज़ि. ने उनका दुपटटा फ़ाड़ दिया और मोटा दुपटटा दे दिया।

मजकूरा अहादीस से साबित है कि बच्ची जब बालिग़ हो जाये तो उसको ऐसे कपड़े पहनने का हुक्म दें। ऐसे लिबास पहनायें जिससे जिस्म के आज़ा वग़ैरा ज़ाहिर न हों। और उन्हें दुपट्टा उढ़ायें।

अल्लाह तआला क़ुराने पाक में इरशाद फ़रमाता है -

तर्जुमा :- और मुसलमान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें। अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करे। और अपना बनाव न दिखायें। मगर जितना खुद ज़ाहिर है। और दुपटटे अपने गिरेवानों पर डालें, और अपना सिंगार न ज़ाहिर करें।

मज़कूरा आयते मुबारका और अहादीसे मुबारका से यह दर्स हासिल करना चाहिए कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रज़ि. नें बारीक कपड़ा और दुपटटा बिल्कुल पसंद नहीं फ़रमाया। अब ग़ौर करने का मक़ाम है जो इस्लामी बहनें बारीक लिबास और दुपटटा इस्तेमाल करती हैं। क्या उनसे हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रते आयशा

सिद्दीक़ा रज़ि. ख़ुश होंगी। हरगिज़ नहीं।

लिहाज़ा प्यारी इस्लामी बहनों को चाहिए कि वो ऐसा लिबास पहनने का मिज़ाज बनायें। जिसको हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अज़वाजे मुत्तहरात ने पसंद फ़रमाया।

अबरो (भवें) बनवाना हराम है -

दौरे हाज़िर में भवें बनवाने और तरशवानें, बाल कटवाने, बाल जुड़वानें, दांतों को रेतने की वबा आम हो गयी है। अक्सर इस्लामी बहनों में यह ऐब आम होता जा रहा है।

इसके मुत्तआल्लिक़ हदीस पाक में लानत आयी है -

हदीस :- सहीह बुख़ारी और मुस्लिम में अब्दुल्ला बिन मसऊद से मरवी उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह की लानत, गोदने वालियों और गोदवाने वालियों पर और बाल नोचने वालियों पर। यानी जो औरत भवों के बाल नोचकर अबरों को खूबसूरत बनाती है। उस पर लानत। और खूबसूरती के लिए दांत रेतने वालियों पर यानी जो औरतें दांतों को रेतकर खूबसूरत बनाती हैं और अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ को बदल डालती हैं।

हदीस :- सुनने अबू दाऊद में इबने अब्बास रज़ि. से रिवायत है उन्होंने कहा बाल मिलाने वाली और मिलवाने वाली और अबरो के बाल नोचने वाली और नोचवाने वाली और गोदने वाली और गोदवाने वाली पर लानत है। (इस्लामी अख़्लाक व आदाब स. 244 - 45)

हुज़ूर सदरूश्शरीआ अलै. इस्लामी अख़्लाक़ व आदाब में इरशाद फ़रमाते हैं -

मसअला - इंसान के बालों की चोटी बनाकर औरत अपने बालों में गूंधे, यह हराम है। हदीस में उस पर लानत आयी। बल्कि उस पर भी लानत जिसने किसी दूसरी औरत के सर में ऐसी चोटी गूंधी। और अगर वो बाले जिसकी चोटी बनाई गयी खुद उसी औरत के हैं जिसके सर में जोड़ी गयी। जब भी नाजायज़। और अगर ऊन या सियाह तागे की चोटी बनाकर लगाये तो उसकी मुमानियत नहीं। सियाह कपड़े का मोबाफ़ (फ़ीता) बनाना जायज़ है। अगर कलावा में

तो असलन हर्ज नहीं। यह बिल्कुल मुमताज होता है। इसी तरह गोदने वाली और गोदवाने वाली या रेती से दांत रेत कर खूबसूरत करने वाली, या दूसरी औरत के दांत रेतने वाली। या मोचने से अबरो के बालों को नोचकर खूबसूरत बनाने वाली और जिसने दूसरी के बाल नोचे। उन सब पर हदीस में लअनत आयी है।

(दुर्रे मुखतार)क्र (इस्लामी अख़लाक़ व आदाब स. 246)

नोट :- प्यारी इस्लामी बहनों से गुज़ारिश है कि चेहरे को और जिस्म को ख़ूबसूरत बनाने के लिए जिन नाजायज़ लवाज़िमात का इस्तेमाल करती है। हरगिज़ वो ख़ूबसूरत नज़र नहीं आ सकतीं। बल्कि अगर वो फ़ुजूल चीज़ों पर तवज्जो न देकर अल्लाह की इबादत में मशगूल रहे। तिलावते कुरआन में मशगूल रहे। नवाफ़िल पढ़े। दुरूदे पाक या कलमा शरीफ़ का विर्द करती रहें तो इन्शाअल्लाह तआला उनके चेहरों पर ऐसा नूर होगा। ऐसी चमक होगी कि उनका चेहरा, और उनकी शख़्सियत सबमें नुमाया होगी।

बच्चों को अदब सिखायें

अदब ही से इन्सान, इन्सान है,

अदब जो न सीखे वो हैवान है।

बाअदब : बानसीब - बेअदब बद नसीब

बच्चों को इस्लामी अख़्लाक़ व आदाब और दीन व मज़हब की बातें ज़रूर सिखायें। बच्चों को तादीब यानी तरबियत देने और अदब सिखाने के बारे में इमामे ग़ज़ाी रह. फरमाते हैं-

''यह इल्म होना ज़रूरी है बेटा मां, बाप के पास अल्ल्लाह की अमानत है और उसका दिल एक नफ़ीस व उम्दा गौहर व मोती है। जो मोम की तरह नक़्श को क़ुबूल कर लेता है। और कोई नक़्श उस पर मौजूद नहीं रहता है। उसकी मिसाल एक पाक ज़मीन की सी है। जब उसमें तुम बीज डालोगे तो वो उगेगा। तो अगर उसमें नेकी का बीज बोओगे तो उसे दीन व दुनिया की नेक बख़्ती का समरा हासिल होगा। मां बाप और असातिज़ा भी उसके सवाब में शामिल रहते हैं। और अगर उसके बर अक्स होगा तो वो बद बख़्त है। जो कुछ वो

बुरा काम करेगा। उसमें ये हज़रात भी शरीक होंगे।

(कीमियाए - सआदत स. 459)

और अल्लाह तआला कुराने पाक में इरशाद फ़रमाता है -

तर्जुमा :- अपनी जानों को और अपने घर वालों को इस आग से बचाओ। (पारा 28, सूरह तहरीम आयत 6)

अदब सिखाने के बारे में एक हदीसे पाक में है कि -

हदीस :- हज़रत जाबिर बिन समरा रज़ि. ने कहा कि हुज़ूर अलै. ने फ़रमाया कि कोई शख़्स अपनी औलाद को अदब सिखाए तो उसके लिए एक साअ सदका करने से बेहतर है।

(तिर्मिज़ी, अनवारूल हदीस स. 348)

सभी मां - बाप पर यह ज़रूरी है कि अपने बच्चों से शफ़क़त व मोहब्बत से गुफ़्तगू करें।

सरकारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तमाम बच्चों के मामले में इस क़द्र रहीम व शफ़ीक़ थे। कि आप जब भी किसी बच्चे को रोता हुआ देखते तो परेशान हो जाते थे। जब हज़रत इमामे हसन और हज़रते इमामे हुसैन रज़ि. रोते थे तो आप फ़रमाते ''फ़ातिमा इन्हें रोने न दिया करो कि इनके रोने से मुझे तकलीफ़ होती है।''

जो बच्चों पर रहम न करे और शफ़क़त का सुलूक न करे उसके लिए वईद है।

हदीसे पाक में है कि -

यानी वो शख़्स हममें से नहीं जो छोटों पर रहम न करे और बड़ों के हक़ को न पहचाने - (बुख़ारी, मुस्लिम)

नोट :- प्यारे इस्लामी भाइयों और बहनों को चाहिए कि वो अपने बच्चों को खाने-पीने, सोने-जागने, उठने-बैठने, मुलाक़ात करने, सलाम करने, रास्ता चलने, गुफ़्तगू करने, लिबास पहनने और उतारने वग़ैरह के आदाब और वालिदैन और असातिज़ा का अदब व एहतिराम करने के आदाब सिखायें।

नमाज़ का हुक्म -

बच्चे को नमाज़ की तरगीब दिलायें - हर मां को चाहिए कि अपने बच्चे को नमाज़ पढ़ने की तरगीब दिलाये क्योंकि हदीस शरीफ़ में औलाद को नमाज़ पढ़ाने का और न पढ़ने पर मारने का हुक्म आया है।

चुनांचे सरकारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमान हैः अपनी औलाद को नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो जब वो सात साल के हो जायें और नमाज़ के लिए उनको मारो जब वो दस साल के हो जायें और इस अम्र के पहुंचने पर उनके बिस्तर अलग कर दो। - (मिशकातुल मसाबीह स. 58)

आला हज़रत फ़तावा-ए-रिज़विया में फ़रमाते हैं -

''जब बच्चा दस साल का हो जाये तो उसको मार कर नमाज़ पढ़ायें।''

अफ़सोस सद अफ़सोस। आजकल की मांएं अपने बच्चों को दीगर उमूर के लिए तम्बीह तो करती हैं। मगर नमाज़ छोड़ने पर या न पढ़ने पर अपने बच्चे को तम्बीह नहीं करती हैं। और ना ही उसे डाटती मारती है। पहले की माएं थी जिन्होंने अपने बच्चों को नमाज़ी बनाकर वलियों का दर्जा दिलाया।

क़ाफ़िला-ए-सूफ़िया के सरखील हज़रत बाबा फरीदुददीन गंज शकर की वालिद माजिदा आपको बचपन में कहा करती कि बेटा नमाज़ पढ़ा करो शकर मिलेगी चुनांचे जब आप नमाज़ पढ़ते तो आपकी वालिदा जानमाज़ के नीचे शकर रख देतीं। एक रोज़ आपकी वालिदा माजिदा कहीं बाहर तशरीफ़ ले गयीं और नमाज़ का वक़्त हो गया। बेटे ने अपनी आदत के मुताबिक जानमाज़ बिछायी और नमाज़ पढ़ने में मशगूल हो गये। इधर वालिदा माजिदा परेशान थीं कि नमाज़ का वक़्त हो गया मेरा बेटा अपनी आदत के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ेगा। लेकिन आज शकर न मिली तो मामला समझ जायेगा। चुनांचे आपने अल्लाह तआला से दुआ की कि ''ऐ अल्लाह मेरी लाज रख ले मैं अपने बेटे के सामने शर्मिंदा न होऊं।

चुनांचे अल्लाह तबारक तआला ने आपकी दुआ को क़ुबूल फ़रमा कर आपकी लाज रख ली। जब आपके बेटे ने जैसे ही नमाज़ पढ़कर जायनमाज़ का कोना उलटा तो उसके नीचे से शकर निकली।

नोट :- इस वाक़िया से प्यारी इस्लामी बहनों को दर्स हासिल करना चाहिए कि वो खुद नमाज़ पढ़े और अपने बच्चों को भी नमाज़ की तरगीब दिलायें।

तालीमे क़ुरआन

प्यारे इस्लामी भाईयों और बहनों को चाहिए कि वो अपने बच्चों को क़ुरआने पाक ज़रूर सिखाये। ताकि उन्हें अपनी मज़हबी किताब से दिली लगाव पैदा हो।

हदीसे मुबारका है -

तर्जुमा :- ''रिवायत है हज़रत मुआज़बिन जबल से फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो क़ुरआन पढ़े और उसके अहकाम पर अमल करे तो क़ियामत के दिन उसके मां-बाप को ऐसा ताज पहनाया जायेगा। जिसकी रौशनी सूरज की रौशनी से अच्छी होगी जो अगर सूरज तुम में होता तो दुनियावी घरों में होती तो उसके मुतअल्लिक़ तुम्हारा क्या ख़्याल है जो उस पर आमिल हो।''

यानी अगर सूरज ज़मीन पर होता तो बताओ उसकी चमक-दमक रौशनी तुम्हारे घरों में कितनी होती। उससे ज़्यादा उस ताज के मोती चमकते होंगे। और आलिमे बअमल के बारे में सोचो उसका दर्जा क़ियामत में क्या होगा। वो तो हमारे ख़्याल से भी वरा है।

(मिरातुल मनाजीह जि.3 स. 241)

आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी 'फ़तावा-ए-रिज़विया' में तालीमे क़ुरआन के मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं -

बच्चों को क़ुरआन मजीद पढ़ाइये, बाद ख़त्मे क़ुरआन हमेशा तिलावत करने की ताकीद करे।

(फ़तावा-ए-रिज़विया जि.10 स. 46)

नोट :- अक्सर लड़के लड़कियां कुरआन तो पढ़ लेते हैं मगर जुमा तक को भी कुरआन की तिलावत करने की भी तौफ़ीक़ नहीं होती।

सीने में हर एक लफ़्ज़ बसा लो तो बने बात
ताको में सजाने को यह कुरआन नहीं है।

मौला तआला हमें और हमारे इस्लामी भाईयों और बहनों को रोज़ाना तिलावते कुरआन करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमिन

वो मोअज़्ज़ थे जमाने में मुसलमां होकर
और तुम ख़्वार हुए तारिक कुरआं होकर

(डा. इक़बाल)

अपने बच्चों को इल्मे दीन सिखाएं

शैख़ मरहूम का क़ौल अब मुझे याद आता है,
दिल बदल जायेंगे, तालीम बदल जाने से।

(अकबर इलाहाबादी)

इल्म एक लाज़वाल दौलत है। जो अज़मत का निशान और तरक़्क़ी-ए-दरजात का ज़ामिन है। खिलाफ़त फिल अर्द का ताज पहनने के लिए एक शर्त है। इल्म के बग़ैर ख़ुदा की पहचान नहीं हो सकती।

हज़रते शैख़ सअदी फ़रमाते हैं -

'बे इल्म नातवां ख़ुदारा ब शनास'
रहता है नाम इल्म से ज़िन्दा हमेशा दाग़
औलादा से तो बस यही दो पुश्त चार पुश्त।

(दाग देहलवी)

इन्सान की अज़मत इल्म ही में पोशीदा है। इल्म इन्सान को अंधेरे से निकाल कर रौशनी की तरफ़ लाता है। सिराते मुस्तक़ीम पर चलाता है। और ख़ुदा-ए-तआला तक पहुंचाता है। इल्म ही इन्सान को जीने का ढंग सिखाता है। और इसी से दुनिया व आख़िरत

संवरती है।

इसी वजह से इल्म को बहुत अहमियत व फ़ज़ीलत हासिल है।

इल्म से रौशन हुआ है आदमियत चराग,

इल्म से पाता है इन्सां अपनी हस्ती का सुराग।

हदीसे पाक में है -

इल्म का हासिल करना हर मुसलमान मर्द औरत पर फ़र्ज़ है। चुनांचे अगर मां-बाप अपनी औलाद को दीनी तालीम से आरास्ता करें तो यह बहुत फ़ज़ीलत की बात है। कि इससे बढ़कर बच्चे और वालिदैन के हक़ में कोई बात नहीं। जिससे दुनिया व आख़िरत के बहुत से फवाइद हासिल हों।

लिहाज़ा औलाद के लिए दीनी तालीम का इन्तिज़ाम करना अज़हद ज़रूरी है। क्योंकि अगर मां-बाप अपनी औलाद को गुस्ल, वुज़ू, नमाज़ दीगर ज़रूरी दीनी उमूर रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी के दीगर मसाइल के अहकाम की तालीम नहीं देंगे और इस जिहालत की वजह से बच्चा किसी हराम काम का मुस्तकिब हुआ तो औलाद के साथ-साथ वालिदैन के ऊपर भी इसका गुनाह है। कि मां-बाप की वजह से ही आज ऐसा फेल सरज़द हुआ।

मुफ़्ती अहमदयार खां नईमी रह. अपनी किताब इस्लामी ज़िन्दगी में फ़रमाते हैं :-

''जब बच्चे और ज़्यादा होश संभालें तो सबसे पहले उनको पांचों कलमे ईमाने ----- और ईमाने मुफ़स्सल फिर नमाज़ सिखाओ किसी मुत्तक़ी या हाफ़िज़ या मौलवी के पास कुछ रोज़ बिठाकर क़ुरआने पाक और उर्दू के दीनियात के रसाइल ज़रूर पढ़ाओ। जिससे बच्चा मालूम कर ले कि मैं किस दरख़्त की शाख़ हूं। और किस शाख़ का फल हूं। और पाकी पलीदी वग़ैरा के अहकाम याद कर लें। अगर हक़ तआला ने आपको चार या पांच बेटे दिये हैं तो कम अज़ कम एक लड़के को आलिम या हाफ़िज़े क़ुरआन बनाओ। क्योंकि एक हाफ़िज़ अपनी तीन पुश्तों को और एक आलिम अपनी सात पुश्तों को बख़्शवायेगा। यह ख़्याल महज़ ग़लत है कि आलिमे दीन को रोटी नहीं मिलती। यक़ीन कर लो अंग्रेज़ी पढ़ने से तक़दीर से ज़्यादा नहीं

मिलता। अरबी पढ़ने से आदमी बदनसीब नही हो जाता। मिलेगा वही जो राज़िक़ ने क़िस्मत में लिखा है। बल्कि तजरिबा यह है अगर आलिम पूरा आलिम सहीहउल अक़ीदा हो तो बड़े आराम में रहता है। और जो लोग उर्दू की चन्द किताबें देखकर व अज़गोई को भीक का ज़रिया बना लेते हैं। कि वअज़ कहकर पैसा-पैसा मांगना शुरू कर दिया। उनको देखकर आलिमे दीन से न डर। ये वो लोग हैं जिन्होंने अपना बचपन आवारगी में ख़राब कर दिया। और अब मुहज़्ज़ब भिखारी है। वरना उलमा-ए-दीन की अब भी क़द्र व मन्ज़िलत है। जब गिरेजुएट मारे-मारे फिरते हैं तो मुदर्रिसीन उलमा की तलाश होती है। और नहीं मिलते।

सहाबा ए किराम की परवरिश बारगाहे नुबूव्वत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में ऐसी हुई जब वो मैदाने जंग में आये तो आला दर्जा के गाजी हुए थे। और मस्जिद में आकर आला दर्जे के नमाज़ी। घर में पहुंचकर आला दर्जे के कारोबारी। कजहरी में आला दर्जे के कारोबारी होते थे। अपने बच्चों को इस तालीम का नमूना बनाओ।''

(इस्लामी ज़िन्दगी स. 32, 33)

तुम शौक से कालेज में फलो, पार्क में फूलो
जायज़ है गुब्बारों में उड़ो, चर्ख को छू लो।
बस एक सुखन बन्द-ए-आजिज़ का रहे याद
अल्लाह को और अपनी हक़ीक़त को न भूलो।

(अकबर इलाहाबादी)

हज़रत सुफ़यान सौरी रह. फ़रमाते हैं -

''इन्सान के हक़ में बेहतर है कि वो अपनी औलाद को इल्म हासिल करने पर मजबूर करे। क्योंकि औलाद की तरबियत के मामले में जवाबदेह है। और इल्मे हदीस सरासर इज़्ज़त है। जिसने इसके ज़रिये दुनिया तलब की उसे मिल जायेगा। और जिसने आख़िरत तलब की वो उसे पा लेगा।''

सरकारे आला हज़रत फ़रमाते हैं -

इल्मे दीन खुसूसन वुज़ू, गुस्ल, नमाज़, रोज़ा के मसाइल

तवक्कुल, कनाअत, जुहद, इखलास, तवाज़ुअ, अमानत,

सिदक, अदल, हया, सलामत, सद्र व लिसान वग़ैरह खूबियों के फ़ज़ाइल - हिर्स, तमअ, हुब्बे जाह, हुब्बे दुनिया, रिया, उजब, तकब्बुर, खियानत, किज़्ब, ज़ुल्म, फुहश, ग़ीबत, हसद, कीना, वग़ैरह बुराइयों के रज़ाइल पढ़ाये। पढ़ाने सिखाने में रूफ़्क़ व नर्मी रखे।

(फ़तावा-ए-रिज़विया जि. 10, स.47)

हाशिया - 1. भरोसा करना, 2. जो मिल जाये उस पर राज़ी रहना, 3. परहेज़गारी तक़वा, 4. मेहमान नवाजी, आओ भगत, 5. किसी चीज़ को महफूज़ रखना।, 6. सच्चाई, 7. शर्म, हिजाब, गैरत, 9. क़ल्ब और ज़बान, 10. लालच, 11. मरतबा की मोहब्बत, 12. दुनिया की मोहब्बत, 13. दिखावा, 14. गुरूर घमण्ड, 15. घमण्ड, 16. दग़ा धोखा, 17. झूठ, 18. गाली, बेहूदा बात, 19. चुगली, 20. जलन, 21. कपट।

आख़िरी उम्र सहाबी-ए-रसूल तलबे इल्म में मशगूल

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक सहाबी रह. से महवे गुफ़्तगू थे। कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वही आयी कि इस सहाबी की ज़िन्दगी एक साअत बाकी रह गयी है। यह वक़्त अस्र का था। रहमते दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब यह बात सहाबी रह. को बतायी तो उन्होंने मुजतरिब होकर इल्तिजा की ''या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे ऐसे अमल के बारे में बताइये जो मेरे लिए इस वक़्त सबसे बेहतर हो।'' तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ''इल्मे दीन सीखने में मशगूल हो जाओ।'' चुनांचे वो सहाबी रज़ि. इल्मे दीन सीखने में मशगूल हो गये। और मगरिब से पहले ही उनका इन्तिक़ाल हो गया। रावी फ़रमाते हैं कि अगर इल्म से अफ़ज़ल कोई शै होती तो रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसी का हुक्म फ़रमाते।

(तफ़सीरे कबीर जि.1 स. 410)

इल्मे दीन से बरतर कोई काम नहीं

हज़रते इमामे ग़ज़ाली अपनी किताब कीमियाए सआदत में फ़रमाते हैं ''यहां तक कि मालूम हो गया कि आदमी दायमी ख़तरात मं घिरा हुआ है और किसी भी वक़्त वो ख़तरे से दो चार हो सकता है। तो उसी से यह मालूम हो जाना चाहिए कि कोई भी काम जिसे आदमी मशगूल रहता हो। इल्म के हुसूल से अफ़ज़ल व बुज़ुर्गतर नहीं है। और इन्सान जिस पेशे से ही वाबस्ता हो वो तलबे दुनिया के लिए ही होता है।''

(कीमियाए सआदत स. 129)

हमेशा के लिए रहना नहीं इस दारे फानी में,
कुछ अच्छे काम कर लो चन्द दिन की ज़िन्दगानी में,

तालीमे निस्वां

तालीम लड़कियों की ज़रूरी तो है मगर,
खातूने खाना हो वो सभा की परी ना हों।
तालीम औरतों को भी देनी ज़रूर है,
लड़की जो बे पढ़ी हो तो वो बे शऊर है।
हर चन्द हो कि उलूमे ज़रूरी की आलिमा,
शौहर की हो मुरीद तो बच्चों की ख़ादिमा।
इसियां से मुहतरिज़ हो खुदा से डरा करे,
और हुस्ने आकिबत की हमेशा दुआ करे।
अच्छा-बुरा जो कुछ है खुदा ही के हाथ है,
नेकी अगर करेगी तो फ़ितरत भी साथ है।

(अकबर इलाहाबादी)

आज कल हमारे मुआशरे में लड़कियों की तालीम पर तवज्जो नहीं है। बच्चियों को सिर्फ़ क़ुरआन पढ़ाने ही पर इक्तिफ़ा करते हैं कहते हैं कि लड़कियों को पढ़ाने की क्या ज़रूरत है, घर का काम-काज आ

जाये इतना ही बहुत है।

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयों। और बहनों। दौर बदल गया है। हालात बदल गये हैं। दौरे हाज़िर में बच्चियों की तालीम के लिए ढेरों इन्तिज़ामात मौजूद है। अपनी बच्चियों को हाफ़िज़ा, क़ारिया, आलिमा, फ़ाज़िला, मुफ़्तिया बनायें। चूंकि जब आपकी बच्ची के पास मज़बूत मज़हबी तालीम होगी तो वो पूरे घर और ख़ानदान के हालात बदल सकती है। अक्सर बेशतर यह देखा गया है कि कुछ वालिदैन अपनी बच्चियों का मज़हबी नही बल्कि दुनियावी तालीम पर ज़्यादा तवज्जो देते हैं। दुनियावी डिग्री पाने के लिए उन्हें चाहे कितनी ही मुसीबत झेलनी पड़े कैसे ही माहौल से गुज़रना पड़े, सब बर्दाश्त है।

मुहासबा करने पर मालूम होता है कि कुछ बच्चियां पढ़ाई के नाम पर कुछ घरों में आती जाती हैं। गैर महरम लड़को से मिलना जुलना होता है। जिसके ढेर सारे नुक़सानात बर आमद हुए हैं।

प्यारे इस्लामी भाईयों और बहनों! अगर आप अपनी बच्चियों को दुनियावी तालीम ही खासतौर से दिलाना चाहते हैं तो मेरी गुजारिश है कि पहले अपनी बच्चियों को मज़हबी तालीम से आरास्ता करे उसके बाद दुनियावी तालीम का एहतिमाम करे दुनियावी तालीम दिलाने में भी इस बात का ख़्याल रखे कि लड़कियां गैर महरम मर्दों के सामने बेपर्दा न हों। और खुद स्कूल तक लाने और ले जाने की ज़िम्मेदारी निभायें। वरना रास्ते में लड़कियों के साथ क्या होता है? उसका इल्म कौन रखता है।

निस्वानीयते जन का निगहवां है फक्त मर्द

तम्बीह 1 :- ख़बरदार जवान बेटियां या घर की कोई औरत दूधवाले से दूध या सब्ज़ी वालों से सब्ज़ी हरगिज़ न लें। क्योंकि इसके बहुत सारे नुक़सानात बरआमद हुए हैं। और बिसात खाने वालों से जो मख़सूस लवाज़िमात को ख़रीद लेती है। कितने शर्म की बात है की औरतें ऐसे सामान मर्दों से ख़रीदती हैं। इससे गुरेज़ करें। अगर औरतें बेचती हों तो उनसे ख़रीदें। नीज़ अपने घर की बहू-बेटियों को खुली छत पर न चढ़ने दें। इस तरह से बेटियों वग़ैरा के छत पर चढ़ने या बेपर्दा होने से बहुत से नुक़सानात हुए हैं। लड़कियां घरों

से किसी ग़ैर महरम के साथ निकल जाती है।

तम्बीह 2 :- हमारे मुआशरे में यह भी देखा गया है कि लड़कियां अपने मामू के लड़के, चचा-ताऊ के लड़के, खाला के लड़के, फूफा के लड़के के साथ कालेज, स्कूल या दीगर मक़ामात पर आती-जाती हैं। अज़रू-ए-शरअ ग़ैर महरम के साथ जाना जायज नहीं।

नोट :- मामू के लड़के, चचा-ताऊ के लड़के, खाला के लड़के फूफा के लड़के ये सब गैर महरम हैं। इससे इसी तरह पर्दा लाज़िम है जिस तरह ग़ैर महरम मर्दों से।

बचाओ मग़रिबी तहज़ीब से तुम अपनी नस्लों को,
यह वो दीमक है जो मशरिक़ की हर बुनियाद खालेगी।
हक़ीक़त ख़ुराफ़ात में खो गई,
यह उम्मत रिवायात में खो गई।

शादी की रूसूमात

शादी-बियाह में तरह-तरह की रस्में अपनायी जाती हैं। हर जगह हर शहर, हर घराने का अपना-अपना एक अलग रिवाज होता है। और कोई भी यह नहीं सोचता कि शरई एतबार से उन रस्मों का करना कैसा हो। बहरहाल जो भी हो ज़रूरी है कि रस्में उसी हद तक अदा की जायें कि इन्सान किसी हराम फेल में मुब्तिला न हो। मगर कुछ लोग तो रस्मों की पाबन्दी इस तरीक़े से कहते हैं कि नाजायज़ व हराम काम करना हो तो मन्ज़ूर मगर कोई रस्म छूटने न पाये। हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में आमतौर पर बहुत सी रस्में अपनायी जाती हैं। जैसे :-

1. मंगनी 2. रतजगा 3. हल्दी 4. मेंहदी लगाना 5. सेहरा 6. बैण्ड बाजे के साथ बारात ले जाना 7. भारी बारात ले जाना 8. दावत में बदला 9. ख़लत-मलत बिठाकर खाना खिलाना 10. सलामी करना 11. सालियों का बहनोई से मज़ाक करना 12. दुल्हन की मुंह दिखाई 13. आतिशबाज़ी 14. वलीमे का न्योता वग़ैरह

मंगनी :- दौरे हाज़िर में मंगनी की रस्म आम है। जबकि शरअ में इसकी कोई असल नहीं। दौरे हाज़िर में मंगनी की रस्म अदा करने के लिए लोग तरह-तरह के रस्म व रिवाज अपनाते हैं। बहुत से कबीलों में मंगनी की रस्म अदा करने के लिए लड़के वाले लड़की के घर कसीर तादाद में आते है। और लड़की वालों पर बेजा ख़र्च का सबब बनते हैं। मुआशरे का मुहासबा करने के बाद मालूम हुआ कि लड़की वाले लड़के के लिए सोने चांदी की अंगूठी सोने की ज़ंजीर लड़के के मां-बाप के लिए कपड़े, बहन-बहनोई, चचा ताऊ के लिए कपड़े वग़ैरह।

उसके अलावा बहुत सी फुज़ूल ख़र्ची होती है। आने वाले मेहमानों के लिए बड़े-बड़े महगें इंतिज़ामात होते हैं। अगर लड़की वाले मुआशी ऐतबार से मज़बूत है तो इतना फ़र्क़ नहीं पड़ता। और अगर मुआशी ऐतबार से कमज़ोर है तो उनका दीवाला निकल जाता है।

अलग़र्ज़ इस तरह की फुज़ूल रस्मों को रिवाज न दिया जाये। अगर मंगनी की रस्म अदा करनी है तो कुछ नक़द रूपये या चांदी की एक अंगूठी पेश कर दी जाये। इतना काफ़ी है। रस्म अदा करने के लिए कसीर तादाद में साथ लाने वाले मेहमानों की रस्म ख़त्म की जाये। मंगनी की रस्म अदा करने के लिए चन्द मखसूस हज़रात ही शामिल हों ताकि मंगनी की रस्म अदा हो जाये।

मंगनी के बाद मोबाइल का इस्तेमाल

हमारे मुआशरे में लड़के-लड़कियों के लिए मोबाइल का इस्तेमाल आम हो गया है। अक्सर यह देखा गया है कि लड़की की मंगनी के बाद मोबाइल मुहय्या करा दिया जाता है और अगर लड़का, लड़की आपस में मोबाइल पर गुफ़्तगू करते हैं। घर के लोगों का मानना यह होता है कि लड़का और लड़की को एक दूसरे का समझना ज़रूरी है। ताकि शादी के बाद ज़िन्दगी पुर सुकून गुज़र सके।

मैं यह अर्ज़ करना चाहती हूं कि घर के लोग अपने नजरयात को तरजीह न दें। बल्कि यह देखें कि शरीअत क्या कहती है। हक़ीक़तन शरअई मसअला यह है कि मंगनी हो जाने के बाद भी लड़का लड़की

एक दूसरे के लिए गैर महरम है। और उनका एक दूसरे को देखना और बात-चीत करना नाजायज़ व हराम है।

समझ लीजिये बादे निकाह ही लड़का-लड़की को एक दूसरे से गुफ़्तगू जायज़ है।

रतजगा :- रतजगे का रिवाज आम है। रतजगे में अक्सर ढोल, ताशा बजाया जाता है। डांस पार्टियां मंगवायी जाती हैं। नाचने-गाने का माहौल होता है। औरतें एक जगह होकर नाचती-कूदती हैं। रात भर गुलगुले पकाती हैं। मस्जिद में ताक़ भरने के लिए इकटठा होकर जाती हैं।

मैं यह अर्ज़ करना चाहती हूं कि अगर रतजगा ही करना है। तो बुरा नही है। गुलगुले शौक़ से बनाइये। मेहमानों को खिलाइये। मगर मस्जिद में ताक भरने के लिए खुद न जाइये। अगर मस्जिद में गुलगुले भेजना मकसूद है तो नमाज़ियों के लिए किसी मर्द के हाथ भेज दीजिये। नाचना-कूदना न करें। ढोल-ताशा न बजायें। गन्दा हंसी मज़ाक़ न करें। अगर रतजगे की खुशी का इज़हार ही करना है तो कुरआन ख़्वानी करें। महफ़िले मीलाद और ज़िक्र ख़ैर करें।

हल्दी (उबटन मलना) :- हमारे मुआशरे में शादी से चन्द रोज़ क़ब्ल दूल्हा और दुल्हन को हल्दी लगाने का रिवाज है। जिसमें बिलखुसूस भावजें वग़ैरहा हल्दी छुआती हैं। और दूल्हा बनने पर आंखों में सर्मा लगाती हैं। उबटन लगाना नाजायज़ नहीं है। मगर शरअई मसअला यह है कि दूल्हे को भावजें और गैर महरम औरतें उबटन न छुआएं न आंखों में सुर्मा लगायें क्योंकि हदीस शरीफ़ में है

जब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा इकराम रज़ि. को पर्दे के अहकाम बता रहे थे। तो सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम देवर के मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया देवर मौत है। यानी जिस तरह मौत से बचा जाता है। उसी तरह भाभी को अपने देवर से बचना, पर्दा करना चाहिए।

मेंहदी लगाना :- शादी के मौक़ा पर दूल्हा-दुल्हन को मेंहदी लगायी जाती है-

बहारे शरीअत में है -

औरतों का हाथ-पांव में मेंहदी जायज़ है। कि यह ज़ीनत की चीज़ है। लेकिन बिला ज़रूरत छोटे बच्चों के हाथ-पांव में मेंहदी लगाना न चाहिए लड़कियों के हाथ-पांव में मेंहदी लगा सकते हैं। जिस तरह उनको ज़ेवर पहना सकते हैं।

(बहारे शरीअत)

इस मसअले से यह पता चला कि औरतें और लड़कियां तो मेंहदी लगा सकती हैं। चाहे शादी के मौक़े पर लगायें या किसी और मौक़े पर।

हदीस शरीफ़ में है -

सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया ''औरतों को चाहिए कि हाथ पांव में मेंहदी लगायें ताकि मर्दों से मुशाबा न हों।

एक और हदीसे पाक में है कि -

ज़्यादा न हो तो नाख़ून ही रंगीन रखें।

(महज़ मेंहदी ही से)

(फ़तावा-ए-रिज़्विया जि.9, निस्फ आख़िर स. 129)

एक मरतबा शहज़ाद-ए आला हज़रत हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म हिन्द से मेंहदी से मुतअल्लिक़ सवाल पूछा गया।

सवाल :- दूल्हा को मेंहदी लगाना दुरूस्त है या नहीं? आजकल आम रिवाज है दूल्हा चांदी का ज़ेवर पहनते हैं। और कंघन बांधते हैं। क्या ज़ेवर और कंघन उतरवाकर निकाह पढ़ावे। अगर ज़ेवर और कंघन पहनें हैं इस सूरत में निकाह पढ़ा दिया तो दुरूस्त है?

अल जवाब :- मर्द को हाथ पांव में मेंहदी लगाना नाजायज़ है। ज़ेवर पहनना गुनाह है। कंघना हिन्दुओं की रस्म है। यह सब चीज़ें पहले उतरवाएं फिर निकाह पढ़ायें कि जितनी देर निकाह में होगी उतनी देर गुनाह में रहेगा। आजारे मुनकर में देर ख़ुद गुनाह है। बाक़ी अगर ज़ेवर पहने हुए निकाह हुआ तो निकाह हो जायेगा।

(फ़तावा-ए-मुस्तफविया)

एक सवाल :- क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन शरहे मतीन मसअल-ए-ज़ैल में कि वाज़ लोग यह कहते हैं कि मर्द अपने हाथ की सिर्फ़ छोटी उंगली में मेंहदी लगा सकता है। इसमें कोई हर्ज नहीं।

मर्दों का मेंहदी लगाना कैसा है। बराये मेहरबानी जवाब इनायत फ़रमायें -

मुबीना अनवार

मुतअल्लिया जामिया ख़दीजा लिलबनात, पूरनपुर

अलजवाब :- मर्दों को अपने हाथ की सिर्फ़ छोटी उंगली में भी मेंहदी लगाना जायज़ नहीं बल्कि हराम है।

इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत रह. अपनी किताब फ़तावा-ए-रिज़विया में फ़रमाते हैं -

"हाथ पांव में बल्कि सिर्फ़ नाख़ूनों में भी मेंहदी लगाना मर्द के लिए हराम है। (फ़तावा-ए-रिज़विया जि. 9, स. 149)

रेशमा खानम अमजदी

खातिमा जामिया खदीजा लिलबनात

पूरनपुर (पीलीभीत) यू.पी.

12 सफ़र 1434 हि.

सेहरा :-

हमारे मुआशरे में सेहरा पहनना और सेहरा पढ़ना और बज़्मे सेहरा का इनइक़ाद साथ ही दूल्हे के गले में नोटों के हार डालने का रिवाज है। और बज़्मे सेहरा में औरतों और मर्दों का खलत-मलत होना आम बात है।

शरअई ऐतबार से सेहरा पहनना मुबाह है। यानी पहने तो न कोई सवाब और न पहने तो कोई गुनाह नहीं।

आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी रह. इरशाद फ़रमाते हैं।

सेहरा न शरीअत में मना है और ना शरीअत में ज़रूरी था मुस्तहब बल्कि एक दुनियावी रस्म है। कि तो क्या? ना की तो क्या? इसके अलावा जो कोई इसे हराम व गुनाह व बिदअत व जलालत

बताये वो सख़्त झूठा सरासर मक्कार है। जो इसे ज़रूरी और लाज़िम समझे और तर्क को बुरा जाने। और सेहरा न पहनने वालों का मज़ाक़ उड़ाये वो निरा जाहिल है।

(हादी उन्नास फी रसूमुल ए अरास स. 42)

लोग सेहरे में रूपये नोट वग़ैरा लगाते हैं यह फुज़ूल ख़र्ची है। और गुरूर व तकब्बुर की निशानी है। और तकब्बुर शरीअत में हराम है।

(वहिवालए-करीम ए ज़िन्दगी)

यह देखा गया कि जब दूल्हा तैयार हो जाता है तो उसके गले में नोटों का हार डाला जाता है। और दूल्हा फिर उसी हालत में मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए जाता है तो इस हालत में उसकी नमाज़ न होगी। क्योंकि नोटो पर जो तस्वीर है वो सामने है।

लिहाज़ा दूल्हे के गले में नोटों का हार डालने से बचना अदब ज़रूरी है।

बज़्मे सेहरा में औरतों और मर्दों का जो ख़लत-मलत होता है अज़रू-ए-शरअ-यह नाजायज़ व हराम है। खलत मलत से वे शुमार हराम फेल सादिर होते हैं और निगाह का ज़िना भी होता है।

अगर बज़्मे सेहरा का इनइक़ाद ही करना है तो साहिबे खाना को चाहिए कि मर्द और औरतों का अलग-अलग इन्तिज़ाम करे कि औरतों की महफ़िल में कोई मर्द न जा सके। और मर्दों की महफ़िल में कोई औरत न जा सके।

बैण्ड बाजे के साथ बारात ले जाना

बाज़ क़बीलों में बैण्ड बाजे के साथ बरात ले जाना फ़ख्र और ज़रूरी समझते हैं। अगर बारात बग़ैर बैण्ड बाजे के साथ जाती है तो कहते हैं कि यह बारात नहीं मय्यत जा रही है। बाज़ क़बीलों में लड़की वालों की जानिब से यह डिमाण्ड होती है कि बारात बैण्ड बाजे के साथ आयगी वरना नहीं।

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयों! और बहनों! अपनी तबीयत को तरजीह न दें। बल्कि शरीअते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को

तरजीह दें। जो भी काम करें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रज़ा के लिए करें। अज़रू ए शरअ बैण्ड बाजा बजाना हराम है। और उसमें शिरकत करने वाले भी सख्त गुनाहगार हैं।

जहां बैण्ड बाजा या डांस पार्टी हो वहां खाना-खाना जायज़ नहीं।

हुज़ूर सदरूश्शरीआ अलै. फ़रमाते हैं -

दावत में जाना उस वक़्त सुन्नत है जब मालूम हो कि वहां गाना बजाना लहिव व लइब नहीं है। और अगर मालूम है कि खुराफ़ात वहां हैं तो न जाये। अगर मुक्तदा व पेशवा हो मसलन उलमा व मशाइख ये अगर न रोक सकते हों वो वहां से चले आयें न वहां बैठे न खाना खायें। और पहले से ही मालूम हो कि वहां ये चीज़ें हैं तो मुक्तदा था न दो किसी को जाना जायज़ नहीं। अगरचे खास इसका हिस्सा मकान में ये चीज़ें न हों। बल्कि दूसरे हिस्से में हो। (रद्दुल मुहतार, बहारे शरीअत) (इस्लामी अख़्लाक व आदाब स. 43)

बाज़ लोग जो शादी के मौक़ा पर बैण्ड बाजे वग़ैरा का इंतिज़ाम करते हैं। या दूसरी तरफ़ वालों पर तक़ाज़ा करते हैं। ये लोग किस क़द्र गुनाहगार होते हैं। बल्कि कराने वाले जितने लोगों को इस गुनाह की तरफ़ बुलाता है। कि जिस क़द्र लोग इसमें शिरकत करते हैं। उन्हें तो इसका गुनाह मिलता ही है। और उन सबका गुनाह उस पर होता है जिसने इसका इन्तिज़ाम कराया है।

हदीसे पाक में है -

हज़रते जरीर रज़ि. से रिवायत है कि जिसने इस्लाम में कोई अच्छा तरीक़ा जारी किया तो उसका बदला उनको भी मिलेगा और जितने लोग उस अमल करेंगे और उसके अज्र में कुछ कमी न होगी। और जिसने कोई बुरा तरीक़ा जारी किया तो उसको इसकी सज़ा भी मिलेगी। रोज़े क़ियामत तक जितने लोग उस पर अमल करेंगे उनकी सज़ा भी मिलेगी और उनकी सज़ा में कुछ कमी न होगी।

(मुस्लिम शरीफ़)

भारी बारात ले जाना :- बाज़ इस्लामी भाई बारात में कसीर तादाद में लोगों को ले जाना फ़ख़्र समझते हैं। और लड़की वालों पर दबाव बनाते हैं और उनसे यह फ़रमाइश करते हैं हमें इतने रंग का नाश्ता और खाने में फुलां-फुलां चीज़ें चाहिए। और फिर उन्हीं बारातियों को अपने घर पर जब वलीमा खिलाते हैं तो सिर्फ एक रंग का खाना ही बमुश्किल दस्तियाब होता है।

लिहाज़ा शादियों में कम से कम बाराती ले जाये ताकि लड़की वालों पर ज़्यादा दबाव न पड़े।

दावत में बदला :- हमारे मुआशरे में यह बात आम हो गयी है कि मअ अहल-इयाल की दावत का बदला मअअहल व इयाल (चूल्हा न्योत) और एक आदमी की दावत का बदला एक आदमी। अगर ऐसा नहीं करते हैं तो बुरा मानते हैं। जबकि होना यह चाहिए कि साहिबे खाना के मुआशी और ज़ाती हालात कमज़ोर हों और वो चूल्हा न्योत या एक आदमी की भी दावत न कर सके तो हमें कोई गिला शिकवा नहीं करना चाहिए।

शादी और दीगर तक़रीबात में खलत-मलत बिठाकर खाना खिलाना :-

प्यारे इस्लामी भाईयों और बहनो। शादी और दीगर तक़रीबात में औरतों और मर्दों को खाना खिलाने का चलन आम हो चुका है।

लिहाज़ा साहिबे ख़ाना को चाहिए कि मर्दों और औरतों के खिलाने पिलाने का इन्तिज़ाम अलग-अलग करे। ताकि पर्दे का एहतिमाम हो सके।

नोट :- प्यारी इस्लामी बहनों से मेरी गुज़ारिश है कि ऐसी जगह जाने से गुरेज़ करें जहां पर ख़लत-मलत खाना खिलाया जा रहा हो। और ना ही अपने घर की बालिग़ लड़कियों को जाने दें।

अक्सर यह देखा गया है कि जहां मर्दों के खाने का इन्तिज़ाम होता है वहां खिलाने वालों की तादाद कम होती है। जहां औरतों का इन्तिज़ाम होता है, वहां जवान लड़की एक भी नज़र आती है। साहिबे खाना को चाहिए कि वो मर्दों के खाने में खिलाने-पिलाने के लिए

मर्दों का। और औरतों में औरतों का इन्तिज़ाम करे। अगर साहिबे ख़ाना ने ऐसा न किया तो वो सख़्त गुनाहगार होगा।

सलामी करना :- आजकल हमारे मुआशरे में सलामी की रस्म आम हो चुकी है कि शादी में दूल्हे को और उसके दोस्तों को अपने घर में बुलाते हैं। फिर घर की औरतें और लड़कियां उनके सामने जाती है। और हंसी मज़ाक़ करती है। और दूल्हा और उसके दोस्तों के साथ छेड़-छाड़ होती है। यह नाजायज़ व हराम है।

प्यारे इस्लामी भाईयों। और बहनों। ग़ौर करने का मक़ाम है कि गैर महरम (दूल्हे की साथी) हमारे घर में आते हैं। हमारे घर की औरतों और बेटियों को ग़लत नज़रों से देखते हैं। क्या हमारी शराफ़त यह गवारा करती है कि गैर महरम हमारे घर की बहु-बेटियों को देखें।

मसअला :- गैर महरम मर्द ख़्वाह अजनबी हो, ख़्वाह रिश्तेदार बाहर रहता हो या घर के अन्दर। हर एक से पर्दा करना औरत पर फ़र्ज़ है। (जन्नती ज़ेवर स. 59)

सालियों का बहनोई से मज़ाक़ करना

हमारे मुआशरे में सालियों का बहनोई से मज़ाक़ करना और बहनोई का सालियों से मज़ाक़ करना बेहतर जानते हैं।

जबकि शरअई ऐतबार बहनोई सालियों के लिए ग़ैर महरम है। जिस तरह से लड़कियां गैर महरम से पर्दा करती हैं। उसी तरह सालियों को बहनोई से पर्दा लाज़मी है।

नोट :- बहुत से ऐसे वालिदैन हैं जो अपनी बेटियों को बहनोई के साथ भेजने-घूमने-फिरने से कोई गुरेज़ नहीं कराते। प्यारे इस्लामी भाईयों और बहनों।

ज़रा ग़ौर कीजिये कि जब बहनोई के सामने सालियों का होना जायज़ नहीं है। तो उनके साथ घूमना-फिरना कैसे जायज़ हो सकता है।

दुल्हन की मुंह दिखाई :- मुआशरे का मुहासबा करने के बाद

यह बात मालूम होती है कि घर में दुल्हन के आने के बाद मुंह दिखाई रस्म होती है। होता यह है कि गैर महरम मर्द आने वाला दुल्हन का चेहरा देखते हैं। गुफ़्तगू करते हैं। मज़ाक़ करते हैं और उसके बाद हदिया देते हैं।

प्यारे इस्लामी भाईयों और बहनों। इस तरीक़े से मुंह दिखाई नाजायज़ व हराम है। जिस तरह से ग़ैर महरम मर्दों से पर्दा क़बले निकाह था। उसी तरह बादे निकाह भी होगा।

नोट :- घर में दुल्हन के आने के बाद सिर्फ़ औरतें ही मुंह दिखाई की रस्म अदा कर सकती हैं। शर्त यह है कि गैर महरम मर्द दुल्हन को न देखे।

वलीमा का न्योता :- हमारे मुआशरे में शादी बियाह की तक़रीब में न्योता लिखाना आम है। साहिबे खाना को देखा गया है कि न्योता या खुद लिखते हैं या वहीं पर मौजूद रहते हैं। ताकि न्योता लिखने वाला कम न लिखवा जाये या बग़ैर लिखवाऐ न चला जाये। खाना खाया या नहीं खाया इस पर तवज्जो नहीं बल्कि इस पर नज़र है कि न्योता लिखवाया या नहीं, या लिखवाया तो कम तो नहीं है।

प्यारे इस्लामी भाईयों और बहनों।

अगर आपकी नज़र सिर्फ़ पैसे पर है। तो आप कितनी भी बड़ी तकरीब का एहतिमाम कर लें। मगर आप सवाब के हक़दार नहीं रहेंगे। क्योंकि आपका मक़सद मेहमानों को खिलाना नहीं बल्कि उनसे वैसे वुसूल करना है।

इसीलिए आप भले ही छोटी तक़रीब करें मगर अपनी नियत में खुलूस रखें।

मण्डया का खाना

हमारे मुआशरे में कुछ जगहों पर मण्डया का खाना खिलाने का रिवाज है। जबकि यह खिलाफ़े सुन्नत है।

मसअला :- दावते वलीमा सुन्नत हैं। वलीमा यह है कि शबे जुफ़ाफ़ की शुबह को अपने दोस्त अहबाब आइज़्ज़ा व अक़ारिब और मोहल्ले के लोगों की हस्बे इस्तिताअत ज़ियाफ़त करे।

आतिशबाज़ी :- शादी ब्याह और दीगर तक़रीबात में आतिशबाज़ी का आम रिवाज है। लोग यह समझते हैं कि जब तक आतिशबाज़ी नहीं करेंगे। उस वक़्त तक ख़ुशी का इज़हार नहीं होगा।

अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी अपनी किताब 'जन्नती जेवर' में फ़रमाते हैं।

''आतिशबाज़ी ख़्वाह शबे बरात में हो या शादी बियाह में हर जगह हर हाल में हराम है। और इसमें कई गुनाह हैं। ये अपने माल को फ़ुज़ूल बरबाद करना है। कुरआन अज़ीम में फ़ुज़ूल ख़र्च करने वाले को शैतान का भाई फ़रमाया गया है। और उन लोगों से अल्लाह और रसूल बेज़ार है। फिर इसमें हाथ पांव जलने का अन्देशा या मकान में आग लग जाने का ख़ौफ़ है। और बिला वजह जान या माल को हिलाकत के ख़तरे में डालना शरीअत में हराम है।''

(जन्नती ज़ेवर स. 116)

निशाने राह दिखाते थे जो सितारों को,
तरस गये हैं किसी मर्दे राहदां के लिए।
निगाह बुलन्द सुख़न दिलनवाज़ जाँ पुरसोज़,
यही है रख़्ते सफ़र मीरे कारवां के लिये।।

डा. इक़बाल

मय्यत की रूसूमात

अल्लाह तबारक व तआला कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है -

तर्जुमा :- हमने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया, और इसी में तुम्हें फेर ले जायेंगे, और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे।

(कन्जुल ईमान पारा 16, रूकूअ 11, आयत 55)

कुरआने पाक की इस आयते करीमा से यह साबित होता है। कि अल्लाह ने हमें मिटटी से बनाया, एक रोज़ मिटटी में मिलायेगा और एक रोज़ मिटटी ही से उठायेगा।

1. हमारे मुआशरे में मय्यत को लेकर बहुत सी अजीब व ग़रीब

रसूमात का चलन जोर शोर पर है। मसलन बीवी का इन्तिक़ाल हो जाने पर बाज़ हज़रात का कहना यह होता है कि शौहर बीवी को मरने का बाद न देख सकता है, न कांधा दे सकता है और ना ही क़ब्र में उतार सकता है।

2. नमाज़े जनाज़ा के बाद मय्यत के मुंह दिखाने का रिवाज जिसमें बिलखुसूस औरत की नमाज़ें जनाज़ा के बाद मुंह दिखाने की रस्म है। जिसमें महरम और ग़ैर महरम का कोई इम्तियाज़ नहीं होता है।
3. बहुत से लोग मय्यत के बालों में कंधा करते हैं। या मय्यत के नाख़ून बड़े होने पर उनके नाख़ून तराश देते हैं। और बाल तराश देते हैं।
4. वाज़ जगह मय्यत के हाथ सीने पर रख देते हैं। जैसे क़याम में बांधते हैं।
5. मय्यत के ग़ुस्ल के लिए कोरे घड़े या लोटे मंगवाते हैं। और मय्यत को ग़ुस्ल दिलाने के बाद उस लोटे या घड़े को तोड़ डालते हैं। और घड़े में रखे हुए पानी को फेंक देते हैं।
6. तीजा वाले दिन ईसाले सवाब के लिए चने पर कलमा पढ़वाना ज़रूरी समझते हैं।
7. औरतें शौहर की वफ़ात के बाद इद्दत का एहतिमाम नहीं करतीं और चालीसवें दिन मायके से लाये हुए कपड़े और चूड़ी और ज़ेवर वग़ैरा इद्दत वाली औरत को पहनाते हैं।

बीवी के जनाज़े को कांधा देना

औरत मर जाये तो उसका शौहर न उसे नहला सकता है न छू सकता है। और देखने की मुमानअत नहीं।

(दुर्रे मुख़्तार)

और अवाम में जो यह मशहूर है कि शौहर औरत के जनाज़े को न कंधा दे सकता है, न क़ब्र में उतार सकता है। न मुंह देख सकता है। यह महज़ ग़लत है। सिर्फ़ नहलाना या उसके बदन के हाथ लगाना मना है। जनाज़े को महज़ अजनबी हाथ लगाते है कंधों पर

उठाते हैं। क़ब्र तक ले जाते हैं शौहर ने क्या क़ुसूर किया है?

(फ़तावा-ए-रिज़विया)

नमाज़े जनाज़ा के बाद ज़नानी मय्यत का मुंह देखनाः-

नमाज़े जनाज़ा से पहले या नमाज़े जनाज़ा के बाद जनानी मय्यत का मुंह गैर महरम को दिखाना जायज़ नहीं है।

प्यारे इस्लामी भाईयों और बहनों। ग़ौर करने का मक़ाम है। जब हयात में ग़ैर महरम मर्दों के सामने औरतों को जाने की इजाज़त नहीं है तो मरने के बाद कैसे हो सकती है?

तम्बीह :- ग़ैर महरम मर्दों को चाहिए कि वो ग़ैर महरम औरतों को हयात और बादे वफ़ात देखने से गुरेज़ करें।

मय्यत के बालों में कंघा करना और नाख़ून तराशना

मय्यत के सर के बालों में कंघा करना नाख़ून तराशना या किसी जगह के बाल मोंडना। या कतरना या उखाड़ना नाजायज़ मकरूह तहरीमी और गुनाह है। बल्कि हुक्म यह है कि जिस हालत पर है उसी पर दफन करें। और अगर नाख़ून या खाल तराश लिए तो कफ़न में रख दें। (आलमगीरी दुर्रे मुख़्तार)

(सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर कामिल स. 144)
बहारे शरीअत हि.4, स. 138

मय्यत के हाथ सीने पर रखना :-

मय्यत के हाथ दोनों करवटों पर रखें सीने पर न रखें कि यह कुफ्फ़ार का तरीक़ा है। (दुर्रे मुख़्तार)

बाज़ जगह नाफ़ के नीचे इस तरह रखते हैं जैसे नमाज़ के कयाय में यह भी न करें। (बहारे शरीअत जि. 4 हि. 138)

(सुन्नी बहिश्ती जेवर स. 144)

मय्यत के ग़ुस्ल के लिए कोरे घड़े का इस्तेमाल

बाज़ जगह यह दस्तूर है कि उमूमन मय्यत के ग़ुस्ल के लिए कोरे घड़े बघने लाते हैं। उसकी कुछ ज़रूरत नहीं घर के इस्तेमाली बघने

लौटे से भी गुस्ल दे सकते हैं। और वाज़ यह जिहालत करते हैं कि गुस्ल के बाद तोड़ डालते हैं। यह नाजायज़ व हराम है। माल जाए करना है। और अगर यह ख़्याल हो कि नजिस हो गयें तो यह भी फुज़ूल बात है। और अगर नजिस पानी की छीटें पड़ी हैं तो धो डाले। धोने से पाक हो जायेंगे। और अक्सर जगह वो घड़े बघने मस्जिदों में रख देते हैं। अगर नीयत यह हो कि नमाज़ियों को आराम पहुंचेगा उसका मुर्दे को सवाब तो यह अच्छी नीयत है। और रखना बेहतर और अगर यह ख़्याल हो कि घर में रखना नहूसत तो यह निरी हिमाक़ते। बाज़ लोग घड़े का पानी फेंक देते हैं यह भी हराम है।

(बहारे शरीअत हि. 4 स. 138)

तीजे के दिन चना पढ़ना :-

मय्यत को दफ़न करने के बाद तीजा की फ़ातिहा करना कारे सवाब है। सोएम की फ़ातिहा में कुछ जगह कलमा शरीफ़ का विर्द कराते हैं। इसमें कोई बुराई नहीं है। सोएम की फ़ातिहा में चने पर ही फ़ातिहा होगी। यह कहना ग़लत है। असल मक़सद कलमा शरीफ़ की गिनती है। वो तो तस्बीह या खुजूर की गुठली वग़ैरा पर भी शुमार कर सकते हैं। मालदार लोग तो चने ख़रीद सकते हैं। मगर जो ख़रीदने से मजबूर है तो ऐसे लोग सोएम की फ़ातिहा (कलमा शरीफ़) तस्बीह या खुजूर की गुठली वग़ैरा पर भी शुमार कर सकते हैं।

शौहर की वफ़ात पर इद्दत का एहतिमाम न करना :-

बाज़ कबीलों में शौहर की वफ़ात के बाद बीवियां इददत का एहतिमाम नहीं करती और चालीसवें रोज़ मायके से नये कपड़े और चूड़ी और ज़ेवर वग़ैरा इद्दत वाली औरत को पहनाते हैं। ऐसा करने की शरीअत में इजाज़त नहीं।

अल्लाह तबारक तआला क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है-

तर्जुमा :- तुम में जो मर जायें और बीवियां छोड़ जायें वो चार महीने अपने आप को रोके रखे फिर जब उनकी इददत पूरी हो जाये तो तुम पर कुछ मुआखिज़ा नहीं इस काम में जो औरतें अपने मामले में शरअ के मवाफ़िक़ करें और अल्लाह को तुम्हारे कामों

की ख़बर है।

सोग और इद्दत :- सोग के शरअई इस्तिलाह में माना यह हैं कि ज़ीनत (बनाव सिंगार) को तर्क करना वाजिब है। यानी हर क़िस्म के जेवर सोने चांदी जवाहर वग़ैरा और हर क़िस्म के हर रंग के रेशम के कपड़े अगरचे सियाह (काले) रंग के हों। न पहने। खुशबू बदबू या कपड़े में लगाकर इस्तेमाल न करें। तेल का इस्तेमाल न करें। अगरचे उसमें खुशबू न हो। जैसे रोगने जैतून वग़ैरा। कंघा न करें। अगर मजबूरी हो तो मोटे दन्दान वाले से करें। सियाह सुर्मा न लगाये। सफेद खुशबूदार सुर्मा भी न लगायें। मेंहदी न लगायें। पूरा हाथ या उंगली कहीं भी न लगायें। जअफ़रान कुसुम गेरू का रंगा हुआ या सुर्ख रंग का कपड़ा न पहनें। गुलाबी धानी चम्पई, तरह-तरह के रंग जिसमें तजईन (जीनत) हो अलमुख़्तसर भड़कीले रंग वाले कपड़े न पहनें। (जवाहिरा नइयरा, फ़तावा ए आलमगीरी, दुर्रे मुख़्तार, बहारे शरीअत)

मसअला :- तीन दिन से ज़्यादा सोग (रन्ज व गम) की हालत में रहना जायज़ नहीं। मगर औरत अपने शौहर के मरने पर चार महीने दस दिन सोग करे। (फ़तावा ए रिज़्विया, बारे शरीअत)

(मुफ़्तिया) **रेशमा खानम अमजदी**
प्रिन्सिपल, जामिया खदीजा लिलबनात
पूरनपुर (पीलीभीत) यू.पी. हिन्द
मुतर्जमः मोहम्मद मियां क़ादरी
(फ़ाज़िल, एम.ए.इंगलिश इतिहास उर्दू, बीटीसी)
जामिया खदीजा लिलबनात
अशरफ़ नगर पूरनपुर (पीलीभीत) यू.पी. हिन्द
मोबाइल 94576-44597

नात शरीफ़

अपनी आँखों में बसा रखी है सूरत उनकी
मेरी बख़्शिश का सामान है सामाने मोहब्बत उनकी

मैंने फूलों से जो पूछा तो हंस के बोले
रोज़ो-शब हम तो किया करते हैं मिदहत उनकी

नारे दोज़ख़ से बचायेंगे शफ़ी-ए-महशर
हमको ले जायेगी जन्नत में शफ़ाअत उनकी

शाहे कोनैन को कहता है तू अपने जैसा
तुझको ले जायेगी दोज़ख़ में अदावत उनकी

हश्र की धूप का क्या ख़ौफ़ तुझे हो 'हसनी'
तुझको दामन में छुपायेगी मुहब्बत उनकी

नात शरीफ़

मुहम्मद को क़ुरआँ के पारों में देखो
उन्हीं की ज़िया चाँद तारों में देखो

हमें मौत आ जाये शहरे नबी में
तड़प है यह हम ख़ाकसारों में देखो

अदू में नबी की मोहब्बत को कैसे
यह जज़्बा तो मैं जाँ-निसारों में देखो

मेरी अज़मतों को वो समझेगा कैसे
ग़ुलामे नबी को हज़ारों में देखो

ब-हुक्म नबी आया सूरज पलटकर
क़मर शक़ हुआ है इशारों में देखो

शफ़ाअत का मुज़दा लिये उनको 'हसनी'
क़ियामत के दिन बे-सहारों में देखो

नात शरीफ़

है क़ुरआँ में तज़किरा ख़ूबसूरत
सरापा नबी की अदा ख़ूबसूरत

इशारों पे चलते हैं चाँद और सूरज
नबी का है यह मोअजिज़ा ख़ूबसूरत

यह साबित है क़ुरआन की आयातों से
है मेराज की रात क्या ख़ूबसूरत

नबी की रज़ा चाहता है ख़ुदा भी
नबी की रज़ा है रज़ा ख़ूबसूरत

रिहा शेर ने की हलीमा की बकरी
दी सरकार ने जब सदा ख़ूबसूरत

क़ियामत में हम आसियों को भी
शफ़ाअत का मुज़दा मिला ख़ूबसूरत

नात शरीफ़

आँसू जो ग़मे हिज्र मदीना में बहेगा
फिर उसाका सिला देखना जन्नत में मिलेगा

जो मुझसे गुनाह हो गया है बख़्श दे मौला
हो जिस पे करम नार में वो कैसे जलेगा

बस दिल मेरा सरकार के जलवों से है रौशन
यह दिल का दिया सोजिशे ग़म से न बुझेगा

जो सुबहो मसा करते हैं सरकार की महफ़िल
फिर देखना फ़िरदौस में घर उनका बनेगा

फ़िरदौस का हक़दार है 'हसनी' वो यक़ीनन
सरकार की उलफ़त में जो सरशार रहेगा

नात शरीफ़

चश्मे करम हो या नबी अपने ग़ुलाम पर
कश्ती को हमने छोड़ दिया तेरे नाम पर

सरकारे दो-आलम का करम एक ही जैसा
बटता है फ़ैज़ उनका सभी ख़ासो-आम पर

पैदा हुए हुज़ूर तो लब पे था या उम्मती
भूले न उम्मती को किसी भी मक़ाम पर

सिद्दीक़ हों उमर हों कि उसमान या अली
ख़ुद को फ़ना किया है रसूले अनाम पर

क्या ख़ूब मर्तबा व राफ़अ्ना लका ज़िकरक
पूछो न उनकी शान है वो किस मक़ाम पर

बस जामी-ओ-हस्सान के सदक़े में ख़ुदाया
फिर झूम के नाते लिखूँ ख़ैरुल अनाम पर

'हसनी' को बुला लीजिए सरकार एक बार
बिक जाये यह ग़ुलाम मोहम्मद के नाम पर

मनक़बत

दरे शान हुज़ूर सदरुश्शरीआ अलैहिर्रहमा घोसी

ग़मे हुज़ूर में जो अशकबार होते हैं
हुज़ूर उनके लिए ग़मगुसार होते हैं

वो काम सद्रे शरीआ ने है किया जिससे
दरे हुज़ूर पे सद इफ़्तिख़ार होते हैं

रज़ा के नाम से जल जाते हैं सभी नजदी
रज़ा के नाम पे हम तो निसार होते हैं

सिला यह ख़ूब है सरकार की मोहब्बत का
फ़क़ीरे शहरे नबी शहरे यार होते हैं

पसारे झोलियाँ दर पे तुम्हारे आये हैं
सभी का रख लो भरम अश्कबार होते हैं

यह निस्बतों का सिला है जो आज तक 'हसनी'
फ़क़ीर होते हुए ताजदार होते हैं

नात शरीफ़

दुनिया में रंगो निकूहत सरकारे दोजहाँ से
पढ़ते हैं कलमा कंकर बेसाख़्ता ज़ुबाँ से

यह है ख़ुदा की क़ुदरत, यह है नबी की अज़्मत,
एक पल में जा के आना, उनको वो ला मकाँ से

सर ता बा क़दम जिनकी क़ुरआन सना ख़्वाँ है
माना दिलो ज़बाँ से, चाहा है उनको जाँ से

बस हो क़ुबूल मेरा नज़राना-ए-अक़ीदत
जो कुछ लिखा है मैंने, इस दस्ते नातवाँ से

हर वक़्त 'हसनी' लिखना नाते रसूले अकरम
बदला है इनका जन्नत जब जाओगे यहाँ से

नात शरीफ़

जश्ने रसूले अकरम हम सब मना रहे हैं
दोनों जहाँ के मालिक तशरीफ़ ला रहे हैं

घर में लगाओ झण्डे ख़ुशियाँ मनाओ मिलकर
रौशन करो घरों को सरकार आ रहे हैं

वश्शम्स उनका चेहरा वल्लैल उनकी ज़ुल्फ़ें
क़ुरआन के यह पारे हमको बता रहे हैं

सरकार के लिए हैं शम्सो क़मर खिलौने
उँगली के इक इशारे उनको घुमा रहे हैं

जो शिर्क कह रहे हैं जश्ने मोहम्मदी को
पागल हैं देवबन्दी दोज़ख़ में जा रहे हैं

बस गौस का है मुर्ग़ा क़िस्मत में सुन्नियों के
वो ख़ाके कौआ दिल को काला बना रहे हैं

महशर के रोज़ आक़ा दामन में तुम छिपाना
इसी आरज़ू में 'हसनी' आँसू बहा रहे हैं

नात शरीफ़

सारे नबियों में है बेहतर, रब की उन पे रहमत है
इन्ना अअतैना कल-कौसर प्यारे नबी की अज़मत है

जान के जो न माने, समझो बद-मज़हब बे-ग़ैरत है
दीने रसूले अकरम ही तो मसलके आला हज़रत है

उनकी विलादत के मौक़े पर हम तो मनायेंगे ख़ुशियाँ
नजदी वहाबी जलते रहेंगे, जलना उनकी क़िस्मत है

ख़ाके कौवे और कपूरे उनको मिलती हैं लज़्ज़त
खायेंगे हम ग़ौस का मुर्ग़ा यह तो रब की रहमत है

शेरे रज़ा के लख़्ते जिगर है, मौलाना इदरीस रज़ा
नजदी वहाबी घबराते हैं, सब पे इनकी हैबत है

जामी ओ हस्सान का सदक़ा हसनी को भी
शाने नबी में नातें लिखना, इसके लिए तो नेअमत है

नात शरीफ़

ईमान पे हो जाये क़ज़ा वक़्ते सफ़र है
दिन रात यही आरज़ूए कल्बो जिगर है

सरकार की अज़्मत को भला कैसे भुला दें
ताज़ीम को झुकता हुआ क़दमों में शजर है

असहाब देते हैं वो जन्नत की बशारत
सरकारे दो-आलम को ज़माने की ख़बर है

इक रोज़ बताया था सहाबा को नबी ने
बू-जहल मरेगा मेरी उंगली यह जिधर है

ख़ुशियाँ नज़र आती है हलीमा के जो घर में
सरकारे मदीना के यह क़दमों का असर है

हो तर्ज़े-बयाँ हसनी का हस्सान के जैसा
टूटे हुए लफ़्ज़ों में कहाँ मेरा असर है

नात शरीफ़

इस दौर की फ़िज़ा में शरर देखता हूँ मैं
साये के लिए कोई शजर देखता हूँ मैं

क्या पूछते हो मुझ से मेरा हाल दोस्तो
बस रहमते ख़ालिक़ है जिधर देखता हूँ मैं

यह जान चली जाये पर ईमानँ न जायेगा
हर मर्दे हक़ का नेज़े पे सर देखता हूँ मैं

ख़ालिद हों कि हमज़ा हों, बूज़र हों कि सलमान
मुश्किल में जो काटे हैं सफ़र देखता हूँ मैं

कितना बड़ा करम है हसनी रसूल का
है जिसका असर ख़ुद में हुनर देखता हूँ

नात शरीफ़

जिनके दिल में हुज़ूर रहते हैं
वो बलाओं से दूर रहते हैं

हाँ सवरती है आख़िरत उनकी
जो गुनाहों से दूर रहते हैं

फूल चुनते हैं जो अक़ीदत के
उनके घर में हुज़ूर रहते हैं

नारे दोज़ख़ में जायेंगे एक दिन
जो शाहे दीं से दूर रहते हैं

'हसनी' सरकार की मोहबबत में
चाँद सूरज भी चूर रहते हैं

नात शरीफ़

यादे तैबा को दिल में बसा लीजिये
दिल को अपने मदीना बना लीजिये

आँखें रहती हैं नम आपके हिज्र में
अब ख़बर या शफ़ीउल वरा लीजिये

देखकर हाजियों को यह कहते हैं हम
एक दिन दर पे हमको बुला लीजिये

देखें गुम्बद वो सरकार हम लोग भी
फ़ासले दरमियाँ से उठा लीजिये

बढ़ के चूमेगी शोहरत क़दम एक दिन
उनकी नातों से दिल जगमगा लीजिये

मनक़बत

दरशाने हज़रते इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

सर अपना दे के दीन बचाया हुसैन ने
नाना से वादा अपना निभाया हुसैन ने

परवाह न कुछ थी जान की, बहरे बकाये दीन
राहे ख़ुदा में घर को लुटाया हुसैन ने

अपने लहू से गुलशने इस्लाम सींचकर
वहदत का फूल हर सू खिलाया हुसैन ने

कुछ इस तरह नमाज़ अदा की है दश्त में
सजदे से अपना सर न उठाया हुसैन ने

सरदारे ख़ुल्द जिसको मेरे मुस्तफ़ा कहें
ग़म कितना फिर भी रन में उठाया हुसैन ने

'हसनी' न छूटा हाथ से दामाने सब्र भी
खा-खा के तीर दीन बचाया हुसैन ने

ज़रूरत हुसैन की

हम सब को बिल-यक़ीं है ज़रूरत हुसैन की
दोनों जहाँ में आज है चाहत हुसैन की

अल्लाह के नबी के नवासे थे वो हुसैन
है दीन की रगों में हरारत हुसैन की

आँखें तलाश करती है जलवे हुसैन के
हर दिल में बस गई है मोहब्बत हुसैन की

मेहमाँ बुला के कर्बो-बला में हुसैन को
तीरो-तबर से की है ज़ियाफ़त हुसैन की

सरदारे ख़ुल्द जिसको कहें शाहे दो जहाँ
अल्लाह ने वो बख़्शी है रिफ़अत हुसैन की

सर तो कटाया पर न दिया अपने हाथ को
इन ज़ालिमों ने देख ली जुरअत हुसैन की

है सुर्ख़-रु ज़माने में हसनी जो आज तक
इस्लाम की बक़ा है बदौलत हुसैन की

मनक़बत

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अलैहिर्रहमा

ख़्वाजा का फ़ैज़ हर-सू हर आन बोलता है
हिन्द वली है ख़्वाजा ईमान बोलता है

अजमेर से है मिलती फ़ैज़ो-करम की नेअमत
हम सब पे ख़्वाजा तेरा एहसान बोलता है

अजमेर में था जिसकी जादूगरी का शोहरा
अब्दुल्लाह उसको हर इक इन्सान बोलता है

सब ख़ानकाहे चमकी दम से तुम्हारे ख़्वाजा
वलियों के दर पे तेरा एहसान बोलता है

ख़्वाजा के हैं दुलारे प्यारे रज़ा हमारे
नातों का उनको हर सू दीवान बोलता है

दरबारे चिश्तिया में हसनी की हाज़िरी हो
जो जाये उन पे तेरा फ़ैज़ान बोलता है

मनक़बत

हज़रत मख़्दूम अशरफ़ सिमनानी अलैहिर्रहमा

पिला साक़ी तू पैमाना मेरे मख़्दूम अशरफ़ा का
बना दे मुझको मस्ताना मेरे मख़्दूम अशरफ़ा का

जो आये हैं तेरे दर पर मेरे अशरफ़ करम का
मिले फ़ैज़े करीमाना मेरे मख़्दूम अशरफ़ा का

पसारो झोलियाँ अपनी दरे अशरफ़ है ऐ लोगो!
बटेगा अशरफ़ी दाना मेरे मख़्दूम अशरफ़ा का

जो देखेगा मेरे अशरफ़ का रौज़ा एक ही पल में
हो जायेगा वो दीवाना मेरे मख़्दूम अशरफ़ा का

जिला मिल जायेगी हसनी दरे अशरफ़ पे जाओ तुम
मिलेगा तुमको तुमको नज़राना मेरे मख़्दूम अशरफ़ा का

मनक़बत

दरे शान आला हज़रत अलैहिर्रहमा

इश्क़े अहमद का मज़हर बरेली में है
सुन्नियत का वो दफ़्तर बरेली में है

हम पे एहसान अहमद रज़ा का रहा
इल्मो-हिक्मत का पैकर बरेली में है

इश्क़ की भीक लेनी है जल्दी चलो
हम ग़ुलामों का सरवर बरेली में है

वो जो जलते हैं जलते रहेंगे सदा
उनकी ज़िल्लत का ख़ंजर बरेली में है

हसनी पूछे कोई उनका रोज़ा कहाँ
रोज़ा-ए-पाक अनवर बरेली में है

मनक़बत

कुतबे पीलीभीत हाजी शाह जी मियाँ अलैहिर्रहमा

हमने तुम से जो भी माँगा, पाये हैं शाह जी मियाँ
दिल का नज़राना लिये हम आये हैं शाह जी मियाँ

मुफ़लिसो मजबूर तेरे दर पे रहते हैं खड़े
ये मुसीबत के भँवर से आये हैं शाह जी मियाँ

इल्म की बख़्शी ज़िया इस नातवाँ मजबूर को
आपकी रहमत के सर पे साये हैं शाह जी मियाँ

ज़ुहदो तक़्वा और विलायत का असर ही था जिसका
बीड़ा मेरे मुस्तफ़ा का पाय हैं शाह जी मियाँ

क्यों न दर पे आ सका है कुछ मेरी मजबूरियाँ
इल्म की ख़ातिर न हम आ पाये हैं शाह जी मियाँ

है करम हसनी पे बेशक कुतबे पीलीभीत का
बिल-यक़ीं फ़ैज़ो करम के साये हैं शाह जी मियाँ

मनक़बत

दरे शाने ख़्वाजा इमाम शाह अलैहिर्रहमा

रौज़ा है कितना प्यारा, ख़्वाजा इमाम तेरा
हर दिल बना दीवाना, ख़्वाजा इमाम तेरा

सब ख़ाली झोली ले के दर पे हैं तेरे आये
सदक़ा मिलेगा किसका ख़्वाजा इमाम तेरा

देखा था जब किसी ने, कलमे की थी सदायें,
हर उज़्व कह रहा था ख़्वाजा इमाम तेरा

आया जो दर पे तेरे ख़ाली नहीं गया वो
है मोतरिफ़ ज़माना ख़्वाजा इमाम तेरा

देखा जो ज़ुहदो तक़्वा सब इक ज़बान बोले
क्या मर्तबा है आला ख़्वाजा इमाम तेरा

तेरे करम का प्यासा हसनी रहा हमेशा
मिल जाये उसको सदक़ा ख़्वाजा इमाम तेरा

जश्ने विलादत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

दीवानो जश्न मनाओ नबी की आमद है
सजाओ घर को सजाओ नबी की आमद है

मेरे रसूल की आमद पर रब ने फ़रमाया
फ़रिश्तो! झण्डे लगाओ नबी की आमद है

मनाया जश्ने विलादत सभी सहाबा ने
दीवानो तुम भी मनाओ नबी की आमद है

नबी के जश्न पे बू-बक्र ने भी की दावत
खिलाओ तुम भी खिलाओ नबी की आमद है

सभी से कहता है हसनी यह बा-अदब होकर
दुरूदे पाक सुनाओ नबी की आमद है

मुफ़्ती नूर मो. क़ादरी हसनी

नाते रसूल पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

होता है हर जहाँ में चस्का मेरे नबी का
शजरो हजर भी गायें नग़मा मेरे नबी का

रब ने मनाया क़ासिम सरकारे मुस्तफ़ा को
खाता है सारा आलम सदक़ा मेरे नबी का

बेशक है अम्बिया में अफ़ज़ल रसूले अकरम
ऐसा मनाया रब ने रुतबा मेरे नबी का

महबूब है ख़ुदा के ऐसे हुज़ूर मेरे
पढ़ता है हर मुसलमाँ कलिमा मेरे नबी का

पढ़ता है जो मुसलमाँ उन पर दुरूद दिल से
होता है ऐसा शैदा इन्साँ मेरे नबी का

कहता है मुस्तफ़ा को इन्सान अपने जैसा
समझा ना तूने नजदी रुतबा मेरे नबी का

यह है तमन्ना या रब हसनी की वक़्ते नज़अ्
बस हो ज़बाँ पे जारी कलेमा मेरे नबी का

मनक़बत मुजद्दिद अल्फ़े सानी

मिला फ़ैज़े करीमाना मुजद्दिद अल्फ़े सानी का
हुआ मैं जब से दीवाना मुजद्दिद अल्फ़े सानी का

शरीअत का तरीक़त का सभी को जाम मिलता है
पीऊंगा मैं पैमाना मुजद्दिद अल्फ़े सानी का

नसब है उनका फ़ारूक़ी तरीक़त नक़्शबन्दी है
तसव्वुफ़ का है मयख़ाना मुजद्दिद अल्फ़े सानी का

बरेली के मुजद्दिद और यही इक़बाल कहते हैं
मक़ामो-मर्तबा आला मुजद्दिद अल्फ़े सानी का

हज़ारों हो गये मुस्लिम फ़क़त रुश्दो हिदायत से
तरीक़ा था शरीफ़ाना मुजद्दिद अल्फ़े सानी का

नज़र आती है नूरो मअरेफ़त की हूर झलक हसनी
रुख़े ज़ेबा है आईना मुजद्दिद अल्फ़े सानी का

मनक़बत क़िबला शाह जी मियाँ अलैहिर्रहमा

है तुम्हारा दिलनशीं दरबार या शाह जी मियाँ
हर तरफ़ है बारिशे अनवार या शाह जी मियाँ

आप हैं दाता मेरे और मैं हूँ मँगता आपका
आप ही तो हैं मेरे ग़मख़्वार या शाह जी मियाँ

घिर गई किश्ती हमारी आ के फिर मंझधार में
कीजिये अपने करम से पार या शाह जी मियाँ

आप से अर्ज़ो गुज़ारिश करता है यह नातवाँ
हश्र में हों आपका दीदार या शाह जी मियाँ

हमको घेरा है बलाओं ने मदद फ़रमाइये
ग़म का करने आये हैं इज़हार या शाह जी मियाँ

हमला आवर कुफ़्र है बस आसरा है आपका
आप हैं शेरे शाहे अबरार या शाह जी मियाँ

एहतिरामे औलिया हसनी का है हुस्ने अमल
फ़ैज़ से सबके रहूँ सरशार या शाह जी मियाँ

मनक़बत उस्तादे गिरामी वहरुल उलूम मुफ़्ती अब्दुल मन्नान आज़मी

इल्म के शम्सो क़मर थे हज़रते बहरुल उलूम
दीनो मिल्लत के शजर थे हज़रते बहरुल उलूम

आबिदो ज़ाहिद फ़क़ीह वक़्त, मुफ़्ती बेनज़ीर
आशिक़े ख़ैरुल बशर थे हज़रते बहरुल उलूम

आपके बहरुल उलूम अल्लामा अरशद ने कहा
माहिरे इल्मो-हुनर थे हज़रते बहरुल उलूम

कारनामों में नुमायाँ है फ़तावा-ए-रिज़विया
साहिबे फ़िक्रो नज़र थे हज़रते बहरुल उलूम

उनके जलवों से रहा हसनी हमेशा फ़ैज़याब
हर घड़ी पेशे नज़र थे हज़रते बहरुल उलूम

नात शरीफ़

ख़तावार आसी हूँ तौबा दिली है
गुनाह मेरी जो भी ख़फ़ी-ओ-जली है

हवादिस ने मुझको जहाँ भी है घेरा
ब-फ़ैज़े पै अम्बर मुसीबत टली है

मुझे बख़्श देना ऐ शाहे मदीना
तुम्हें ही शफ़ाअत की क़ुदरत मिली है

कटाया था सर अपना करबल में जिसने
नवासा नबी का वो इबने अली है

बशर छोड़ता है जो क़सदन नमाज़ें
समझ लो उसे नारे दोज़ख़ मिली है

मैं आज़ाद रहता हूँ उक़्बा के ग़म से
मुझे ग़ौसे आज़म की निसबत मिली है

हुई है शोहरत रज़ा की जहाँ में
''फ़िदा हो के तुझ पे यह अज़्मत मिली है''

ना पायेगा हसनी लहद में अन्धेरा
तुझे नअ़्त गोई को नेअ़्मत मिली है

नाते पाक

उनके रोज़े की ज़ियारत कीजिये
पहले आँखों की तहारत कीजिये

सइऊदे आलम शफ़ीउल मुजनिबीं
या रसूलल्लाह शफ़ाअत कीजिये

देख के आये हैं जो शहरे नबी
उनकी आँखों की ज़ियारत कीजिये

दिल अगर जलता है उनका तो जले
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

गुमराही की पुर-फ़ितन माहौल में
पैरवी-ए-आला हज़रत कीजिये

जाल में नजदी के न फंसना कभी
आला हज़रत से मोहब्बत कीजिये

मुफ़्ती-ए-आज़म का यह फ़ैज़ान है
जानो-दिल से उनसे उलफ़त कीजिये

आज यह पैग़ाम हसनी का सुनो
मज़हबे बातिल से नफ़रत कीजिये

मनक़बत दरे शाने मुजद्दिद अलफ़े सानी शैख़ अहमद सरहिन्दी

करूँ न क्यों बयाँ अज़मत मुजद्दिद अलफ़े सानी की
मुझे हासिल है जब निसबत मुजद्दिद अलफ़े सानी की

लगाया था जो शजरे ममनूआ अकबर ने मज़हब का
क़लम करने की थी हिम्मत मुजद्दिद अलफ़े सानी की

मुहद्दिसे हक़ देहलवी और बरेली के मुजद्दिद ने
अक़ीदत से की है इज़्ज़त मुजद्दिद अलफ़े सानी की

हुए आफ़ताब आबिद जेल में तबलीग़ से जिसकी
मुख़्तसिर थी बहुत दावत मुजद्दिद अलफ़े सानी की

मुजद्दिद अलफ़े सानी का ना सानी है जहाँ भर में
ज़माने में हुई शौहरत मुजद्दिद अलफ़े सानी की

इलाही देख ले हसनी दयारे शैख़े अहमद को
रुलाती है इसे फ़ुरक़त मुजद्दिद अलफ़े सानी की

मनक़बत हज़रत अशरफ़ी मियाँ

हम शबीहे ग़ौसे आज़म आला हज़रत अशरफ़ी
दिल के आईने में हरदम आला हज़रत अशरफ़ी

शानो-शौकत इल्मो-हिकमत है तेरे शायाने शान
सबकी नज़रों में मुकर्रम आला हज़रत अशरफ़ी

आपका फ़ैज़ान जारी है अरब से ता अजम
मिल रहा है सबको पैहम आला हज़रत अशरफ़ी

देखकर कहने लगे थे हज़रत अहमद रज़ा
हम शबीहे ग़ौसे आज़म आला हज़रत अशरफ़ी

सिलसिल-ए-अशरफ़ी जो आज है चारों तरफ़
देन है तेरी मुअज़्ज़म आला हज़रत अशरफ़ी

अशरफ़ी मयख़ाने से हसनी को मिल जायेगा जाम
जब हैं साक़ी मेरे हमदम आला हज़रत अशरफ़ी